प्रेम पत्र

पूज्य श्री मोरार जी भाई देसाई

सादर प्रणाम !

आपकी इज्जत करते-करते मैं बड़ा हुआ हूं। लेकिन मुझे यह मालूम न था कि आप इस उम्र में फिर से जवान हो गये हैं।

श्री चरणसिंह और उनके जमूरे राजनारायण को आपने जिस छू-मन्तर से साफ किया उसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। लेकिन यदि आप ये समझ बैठें कि अब आपके लिए देश में कोई समस्या नहीं रही है तो आप धोखे में हैं।

असल में समस्या आपके लिए अभी पैदा हुई हैं क्योंकि अब चरणसिंह और बाबू जगजीवन राम के अलावा और मुहरों को भी प्रधानमंत्री की गद्दी पास दीखने लगी है।

श्री जार्ज फर्नांडिज समझते हैं कि दुनिया के सारे सोशलिस्ट उनके साथ हैं। इसलिए आपकी गद्दी पर सबसे बड़ा हक उनका है। चन्द्रशेखर जी समझते हैं कि सारी जनता पार्टी में सीधे-सच्चे खिलाड़ी केवल एक वे ही हैं। इसलिए अब जल्दी से गद्दी उन्हें मिलनी चाहिए।

उधर बहुगुणा में इतने गुण हैं कि उनका नम्बर प्रधानमंत्री बनने का जल्दी आना चाहिये। इसी लड़ी में कई मुहरे और भी हैं।

आपकी सेवा में यह सुझाव रखना चाहता हूं कि दायें-बायें से सावधान रहियेगा, ताकि देश सीधे रास्ते चलाया जा सके।

आपका

मुखपृष्ठ पर

मुझे अपनी विजय का था पूरा विश्वास,
एक झलक में इसके उड़ गये होश हवास,
उड़ गये होश हवास तैयारी मैं कर के आया
एक पल भी यह मेरे आगे टिक न पाया।

अंक : २५, २० जुलाई से २६ जुलाई १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दें
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जावेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस

प्रश्न दीवाना के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के

सुरेश चन्द्र शर्मा 'निशांत', जबलपुर

प्र० : आपके दांत असली हैं या नकली, कुल कितने हैं ?

उ० : फिक्स बत्तीसी कराई, यार धोखा दे गया,
तीस हम पर रह गए, दो दांत चिल्ली ले गया।

ऐनुल रोशन, मुजफ्फर नगर

प्र० : रोते हुए व्यक्ति को कैसे हंसाना चाहिए ?

उ० : काका की कविता पढ़े, 'दीवाना' मँगवाय,
कैसा भी मनहूस हो, रोते से हँस जाय।

केवल प्रकाश काशीपुर, (नैनीताल)

प्र० : विज्ञान दिनों दिन प्रगति कर रहा है किन्तु मनुष्य अशांत क्यों होता जा रहा है ?

उ० : यह कहते हमने सुने, वेदांती विद्वान,
इक दिन वैज्ञानिकों को, निगल जाय विज्ञान।

अर्जुन देव तनेजा, फतेहाबाद (हिसार)

प्र० : लड़की को छेड़ो, तो वह सैण्डल लेकर क्यों खड़ी हो जाती है ?

उ० : सेंडिल पहिनें इसलिए, लड़की सभी सुशील,
पैरों की रक्षा करें, और बचावें शील।

अरुण कुमार पो० सिन्द्री, (धनबाद)

प्र० : आपात स्थिति के दौरान भारत में कुछ सुधार हुआ था क्या ?

उ० : गद्दी छिन गई गाय की, बछड़ा पहुंचा जेल,
इस भारत में सर्वदा, हुए सुधारक फेल।

याद कुमार सुगन्ध, रेवाड़ी

प्र० : नशाबन्दी योजना पर आपके विचार ?

उ० : पीने की लत है जिसे, उसको कौन छुड़ाय,
यदि असली नाहीं मिले, नकली पी मर जाय।

सुरंजन कुमार रंगीला, गया (बिहार)

प्र० : काका जी, अब तो आप सन्यास ले लीजिए, ताकि मैं आप का स्थान प्राप्त कर सकूं ?

उ० : वर्ष तिरासी के हुए, बुझी न सत्ता प्यास,
मुरारजी मौजूद हैं, हम क्यों लें सन्यास ?

हरीश कुमार अमित, सिरसा

प्र० : परीक्षा में सफलता का रहस्य बताइये ?

उ० : दादा टाइप छात्र को, चाकू पर विश्वास,
नकल करो, हो जाउगे, फर्स्ट डिवीजन पास।

दिनेश कुमार होतवानी, रायपुर

प्र० : कुत्ता जब रोटी खाता है तो दुम हिलाता है, ब[न्दर] क्यों नहीं हिलाता ?

उ० : धन्यवाद के रूप में, कुत्ता पूंछ हिलाय,
बन्दर स्वार्थी जीव है, खाय और गुर्राय।

आफरीन बेगम, कटक (उड़ीसा)

प्र० : आप माथे पर टीका चन्दन का लगाते हैं या लिपस्[टिक]

उ० : ओठों वाली लिपस्टिक, मस्तक पर लग जाय
मनुआं बेईमान है, चुम्बन को ललचाय।

मंजू भूपाल, सिरसा (हिसार)

प्र० : 'दीवाना' के आप अकेले ही उत्तर देते हैं, या [क]भी सहयोग लेते हैं ?

उ० : पहिली लाइन लिख रहा, काका कवि का पैन,
काकी जी पूरी करें, तुरन्त दूसरी लैन।

विनोद पुरी अशोक पुरी, लुधियाना

प्र० : अधिकतर बच्चे रात में ही पैदा क्यों होते हैं ?

उ० : अंधकार में प्राप्त हो, एकांती आनन्द,
जच्चा-बच्चा इसलिए, करते रात्रि पसंद।

बद्री प्रसाद शर्मा 'अनजान', गोला बाजार

प्र० : 'किस्सा कुर्सी का' के बारे में आपकी क्या राय है

उ० : केस चल रहा कोर्ट में, नहिं दे सकते राय
वरन, 'कोर्ट कन्टैम्प्ट' में काका भी फंस जाय

सुरेन्द्र सिंह अवधवासी, कोटद्वार (गढ़वाल)

प्र० : बेटे वाले लड़की देखने जाते हैं, उस समय पित[ा] पूछता है, पसंद है या नहीं, तो लड़की सिर [झुका] लेती है ?

उ० : नीचे सिरका अर्थ है, लड़का है स्वीकार,
सर को ऊंचा उठाकर, कर देगी इंकार।

अपने प्रश्न केवल
पोस्ट कार्ड
पर ही भेजें।

काका के का[रतूस]
८-बी बहादुरशाह [ज़फर मार्ग]
नई दिल्ली

मन के लड्डू

एक दिन पतलू से कहा मोटू ने मुसकाय।
क्यों ना चेलाराम की शादी कर दी जाय॥
शादी कर दी जाय दूर हो दिल का खटका,
इंतजाम सब करवा देंगे डाक्टर झटका।
पतलू बोला-रिश्ता तो तय हो जाएगा;
लेकिन रुपए, गहने, कपड़े कौन लाएगा?
कहे घसीटाराम तजुर्बा बीस साल का।
मुझे बताना जब हो खतरा जान-माल का॥
यह सुनकर कहने लगा वत्स अंगूठानन्द।
सुनो घसीटाराम जी तुम रक्खो मुंह बन्द॥
तुम रक्खो मुंह बन्द बेतुकी छेड़ रहे हो,
बेमतलब में अपनी टांग घुसेड़ रहे हो।
जाओ मधुबाला जी से ही फोन मिला लो;
गोबरधन को चिट्ठी लिखकर 'बैरंग' डालो॥
कहे धुत्त मदहोश कि चिल्ली को बुलवाओ।
ले लो उसकी राय तभी 'प्रोग्राम' बनाओ॥
छुट्टन, मिट्टन आ गए सुनकर यह सब बात।
मोटू बोला-आइए, जानी है बारात॥
जानी है बारात कहां मर गया झमूरा?
छुट्टन ने बतलाया-वह पागल है पूरा।
सदा लड़कियों के चक्कर में ही रहता है;
हर हफ्ते बेचारा 'इनसल्टें' सहता है॥
कहे चतुर अतिशीघ्र करो उसकी भी शादी।
पंचतन्त्र से शिक्षा लो रोको बरबादी॥
चतुरसेन की बात सुन मिट्टन हुआ उदास।
था परोपकारी खड़ा दरवाजे के पास॥
दरवाजे के पास रुकी आकर एक गाड़ी,
गाड़ी में से उतरे सिलबिल, पिलपिल याड़ी।
उनके पीछे-पीछे चूहाराम आ गया;
सारे घर में दीवाना कोहराम छा गया।
कहने को कुछ मोटू ने मूंह खोला अपना।
पहले छींका फिर बोला-यह तो था सपना!

— मिश्रीलाल जायसवाल

निर्माता निर्देशक रमेश बैंल प्रस्तुत करते हैं रोज मूवीज कृत

कसमें आधे

बनाम–कसमें वायदे

गीत-गुलशन बावला
संगीत-अर्र रंडी. बर्मन
कथा, पटकथा, लेखक-
मिजला ब्रदर्स
कलाकार—रक्खी,
अभिटाप बच्चन,
रणधीर कपूत, नीटू सिंह,
विजय अन्दर आ, पगवान,
आजाद, निटिन सेटी,
शरारत सक्सेना
मेहमान कलाकार रेका
और अमजद कान
आजकल के छात्र असंतोष
पर बनी एक फिल्म

अमित और राजू दो भाई थे। अमित गम्भीर स्वभाव का व्यक्ति था। वह कॉलिज में प्रोफेसर था। राजू अमित का छोटा भाई था। उसकी पढ़ाई में रुचि नहीं थी। वह दो बार बी. ए. परीक्षा में फेल हो चुका था। राजू बहुत शरारती भी था। कॉलिज में आये दिन कोई न कोई शरारत जरूर खड़ी करता रहता था। अमित को उसके कारण बहुत कुछ भला-बुरा सुनना पड़ता था। लाख समझाने पर राजू ठीक रास्ते पर नहीं आता था। कालिज यूनियन का भी वह दादा था। जो आये दिन तोड़-फोड़, हड़ताल व दंगा फसाद का वातावरण कॉलिज में बनाये रखता था। सारांश यह कि अमित एक बुद्धू किस्म का आदमी था, उसे यह भी पता नहीं था कि आजकल की पढ़ाई में कुछ नहीं रखा है। जीवन निर्माण में उससे कोई सहायता नहीं मिलती। लोगों का ख्याल था कि बचपन में सिर में चोट लगने के कारण अमित का भेजा हिल गया था।
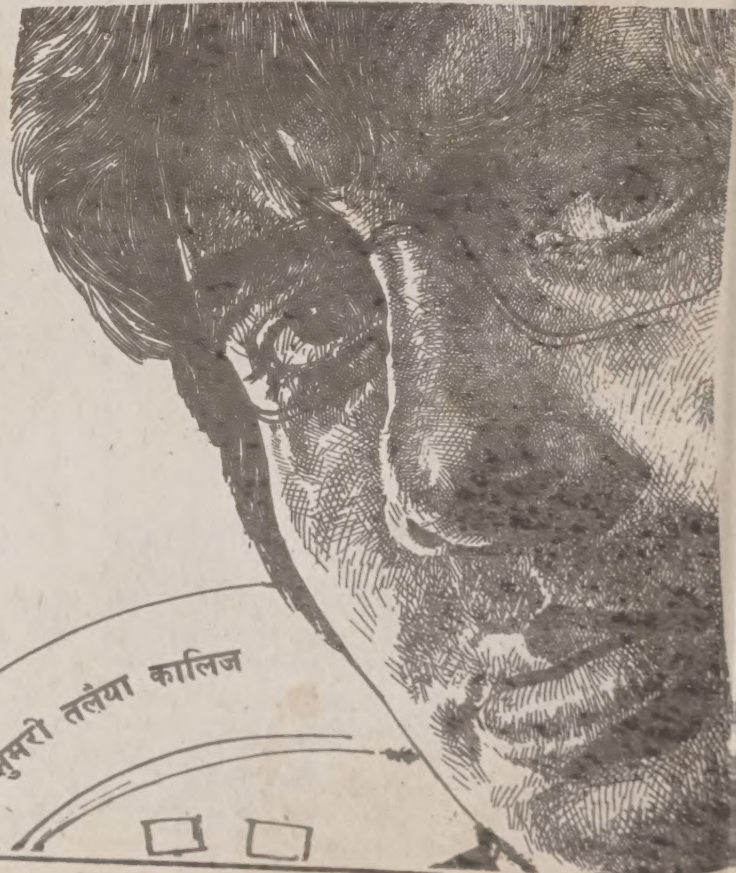
मुमरी तलैया कालिज

प्रोफेसर अमित के जीवन का एक और पहलू भी था। वह कुमन नाम की एक चित्रकार लड़की से प्रेम करता था।
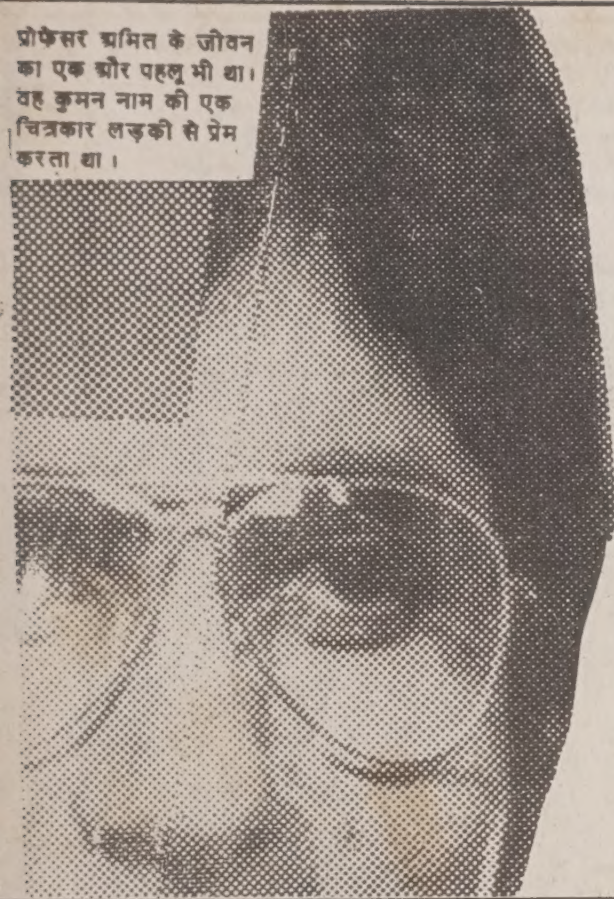
यूं तो अमित और कुमन एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे परन्तु अमित ने फिलहाल उससे शादी न करने का फैसला किया। क्योंकि उसने अपनी मरती हुयी मां को बारह रुपये के स्टाम्प लगे पेपर पर लिख कर वायदा किया था कि राजू को अपने टांगों पर खड़े होने लायक बना कर ही वह अपनी शादी करेगा। कुमन भी जरा समय चाहती थी यह परखने के लिये कि क्या सचमुच ही अमित का भेजा खराब था जैसे कि लोग कहा करते थे। कुमन हमेशा राजू का पक्ष लिया करती थी। वह प्रोफेसर को समझाती थी कि आजकल के कोर्स की पुस्तकों का रट्टा मार कर परीक्षा पास कर डिग्री लेने में कोई तुक नहीं है। डिग्री वाले तो आजकल भैंसें चराते हैं। यूनियन और दादागीरी ही आजकल के जीवन की सफलता की कुंजी हैं। कालिज में हड़ताल व दंगा फसाद करवाने वाले के सामने भविष्य में नेता आदि बनने के सुनहरे अवसर खुले रहते हैं।

उसी कॉलिज में एक अमीर और प्रभावशाली बाप का बेटा कुन्डन प्रवेश लेता है। उसे कॉलिज में राजू की दादागीरी अच्छी नहीं लगती। क्योंकि वह स्वयं भी अपना कैरियर बनाने का इच्छुक था उसे भी आगे चल कर नेता बनना था, नौकरी में तो रखा ही कुछ नहीं है। ज्यादा से ज्यादा डिग्रियां प्राप्त करके लोहा कूटा जा सकता है। प्रोफेसर अमित ने राजू को साफ-साफ बता दिया कि वह कुन्डन से टक्कर न ले। परन्तु राजू नहीं माना और आखिर जो होना था वही हुआ। एक दिन राजू व कुन्डन में आमने-सामने टक्कर हो गयी। प्रोफेसर अमित उसी तरफ आ निकला। उसने दोनों दलों में बीच-बचाव करने का यत्न किया और शांति पर भाषण देने लगे। इस बात से साफ जाहिर हो गया कि अमित का भेजा सचमुच ही खराब था वर्ना कौन बेवकूफ आजकल दो मारपीट पर उतारु छात्र दलों के बीच, बीच-बचाव करने की मूर्खता करता है। ऐसी स्थिति में तो पुलिस भी चुप रहती है। कुन्डन अमित को छुरा मार देता है। सभी छात्रों का मत था कि खराब भेजे वाले प्रोफेसर की छुट्टी करना ही ठीक है।

अमित की मृत्यु हो जाती है परन्तु मरने से पहले वह आम फिल्मी हीरो की तरह शांति और व्यवस्था पर तीन घंटे लम्बा अनएडीटिड वक्तव्य दे देता है। सारे भारत के लोगों ने खुशी मनाई कि शुक्र है आल इण्डिया रेडियो ने उसके वक्तव्य की कमेंट्री प्रसारित नहीं की। अमित की मृत्यु के बाद राजू एकदम बदल जाता है। फिल्मी हीरो रेडियो की तरह होता है। जब मर्जी बटन घुमा दो, मीटर बैंड बदल जाएगा और एकदम नया कार्यक्रम आने लगेगा और कुछ विपत्ति आये तो फिल्मी हीरो सीधे बम्बई जाता है जैसे गीदड़ की जब मौत आती है तो शहर की तरफ भागता है। वैसे तो कुमन की अमित से शादी नहीं हुई थी। फिर भी वह स्वयं को उसकी पत्नी मानती थी। अतः अमित की मृत्यु के बाद वह बगैर टिकट विधवापन का शो देखने लगी, उसने भी राजू के साथ बम्बई जाने का फैसला कर लिया क्योंकि अमित के न होने पर वहीं कौन उसका कैंटीन का बिल दे देता।

BOMBAY EXPRESS

राजू भी कुमन को साथ ले गया बेशक वह उसकी असली भाभी नहीं थी, मुफ्त में नकली भी मिले तो क्या हर्ज है। दूसरे भाभी होने का लाभ यह था कि उसे टिकटों की क्यू में खड़ा नहीं होना पड़ता था भाभी लेडीज वाली लाइन में आगे बढ़ कर फटाफट टिकट ले आती। हीरो भाई लोगों को बम्बई पहुंचते ही नौकरी मिल जाती है। नौकरी तो जैसे पहले ही उनकी इंतजारी में पलकें बिछाये वहां बैठी रहती है। राजू को नीतू सिंह कैरियर सर्विस में कैसियर की नौकरी मिल गई। नौकरी भी कोई सख्त नहीं थी, आसान-सा काम था नीतू नाम की मालकिन रोज ढेरों लव लैटर लिखा करती थी, राजू के जिम्मे बस यही काम था कि वह पत्र फौरन दिन भर पत्र ग्राहक के पास पहुंचाता रहे। पत्रों पर अलग अलग एड्रेस नहीं होते थे, एक ही एड्रेस होता था चिंटू कपूर का! अतः राजू का काम और भी आसान था, इधर पत्र खत्म हुआ और उधर वह उसे लेकर चिंटू के घर की ओर दौड़ पड़ा। कभी-कभी नीटू को जब प्रेम ज्वर अधिक चढ़ा होता था तो उन दिनों उसे ओवर टाइम के पैसे भी मिल जाते थे। चिट्ठियां लिखने का सिलसिला रात को एक बजे तक जारी रहता था।

बम्बई में एक अजीब बात होती है। (हर फिल्म में होती है) राजू को कंकर नाम का एक गुंडा मिलता है जिसकी शक्ल हूबहू उसके मृत भाई अमित से मिलती है। वह उसे घर ले आता है। कुमन भी उसे देखकर आश्चार्य चकित रह जाती है। कंकर कुमन पर आसक्त हो जाता है और गुण्डागर्दी छोड़ शरीफ आदमी बनने का निश्चय कर लेता है। राजू उसे भी नीतू कैरियर सर्विस में नाइट कैरियर की नौकरी दिला देता है। क्योंकि नीटू ने २४ घण्टे प्रेम पत्रों का सिलसिला शुरू करने का निर्णय कर लिया था। कंकर के रूप को देख कर कुमन भी उसकी ओर आकर्षित होने लगी परन्तु उसके अन्दर दिल में भयंकर कशमकश चल रही थी। शक्ल वही हुयी तो क्या यह व्यक्ति अमित तो नहीं है। लिफाफे एक जैसे हैं लेकिन खत के मजमून तो एक नहीं हो सकते। डोसे और समोसे हर हलवाई के शक्ल में एक जैसे ही होते हैं लेकिन फर्क तो अन्दर के मसाले में होता है। परांठे भी देखने में एक जैसे लगते हैं लेकिन खाने के बाद पता लगता है कि किसी में अन्दर मूली होती है, किसी में गोभी और किसी में आलू। इस अंतर्द्वन्द्व में कुमन उलझी हुयी थी।

इसी बीच एक गुण्डों का सरदार कुमन का अपहरण करवा देता है। हीरोइन का दिल जीतने का हिन्दी फिल्मों का फार्मूला इतना पुराना है अब तो इसके ऊपर चील और गिद्ध मंडराते नजर आते हैं। आगे जो हुआ वह विस्तार से कहने की आवश्यकता नहीं। कंकर गुन्डों से लड़ कर कुमन को छुड़ा लाता है। कंकर के साहसपूर्ण कार्य को देख कुमन का हृदय परिवर्तन हो जाता है। उसने यह भी देख लिया फाइटिंग के दौरान कंकर चक्कू भी चला लेता है। इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि कंकर गृहस्थी बनने लायक था। प्याज और आलू छीलने में ट्रेंड है। पपीते और खरबूजों का गूदा निकाल सकेगा। बच्चों की पैंसिलें छील सकेगा। अचार डालने के लिये नींबू और अंबियां काट सकेगा। उधर राजू भी खुश था कि चलो बला टली क्योंकि कुमन बाद में जब उसके दिल में रस्सा-कस्शी चल रही थी तो रोटियां बहुत ज्यादा खाने लगी थी और मारपीट कर दिखाने के कारण यह भी साबित हो गया था कि कंकर का भेजा अमित की तरह खराब नहीं है।

अपने प्रश्न केवल
[illegible]
पर ही भेजें ।

अनुराधा वर्मा—दिल्ली : मैं यह पूछना चाहती हूं कि दीवाना कैमल रंग भरो प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए क्या कैमल कलर ही प्रयोग में लाएं ?

उ० : सुन्दर रंग भरकर आप इनाम जीतना चाहती हैं, तो यही कीजिए ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

केवल प्रकाश—काशीपुर : आप के सामने कोई गम्भीर समस्या आती है तो आप क्या करते हैं ?

उ० : अब तक तो कुछ समझ नहीं आता था कि क्या करें । पर आगे से कोई गम्भीर समस्या आई तो हम 'सूरजकुंड' चले जाया करेंगे ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

योगेश कुमार अग्रवाल, डीमापुर नागालेंड : बाल बढ़ाने पर बुजुर्ग लोग एतराज क्यों करते हैं ?

उ० : क्योंकि वह जानते हैं कि आज के बढ़ते 'बाल' एक दिन सबके सर पर मुसीबत बन जायेंगे ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

रामनाथ शर्मा—कानपुर : क्या आप श्री मोरारजी देसाई की नशाबंदी पालिसी के हामी हैं ?

उ० : उस हद तक जहां ऐसी हालत होती है कि एक बार नशे में धुत्त एक आदमी ने दूसरे आदमी से पूछा, 'भई क्या तुम बता सकते हो कि मैं कहाँ हूं ?' दूसरे आदमी ने जवाब दिया, 'तुम लाल किले के पास हो ।' इस पर नशे में धुत्त आदमी बोला, 'भई यह तो मैं भी जानता हूं कि मैं लाल किले के पास हूं । पर मैं यह पूछ रहा हूं कि मैं कौन से शहर में हूं ?

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

लक्ष्मी किशन जठानन्द—उल्हासनगर : आप मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं देते क्या इसके लिए आपको कोई घूस देनी पड़ती है ?

उ० : दीवाना के लिए आपकी शुभ कामनायें हमारे लिए सबसे बड़ी घूस है । प्रश्नों के उत्तर देने में देर केवल इस कारण होती है कि हमारे कोटे में केवल प्रश्न उत्तर के लिए एक पेज है और भतीजों के पत्र एक बोरी भरकर रोज आते हैं ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

निन्दी डेविड—कपूरथला : क्या आपको चाची कभी आसमान की परी नजर आती हैं ?

उ० : आप आसमान की परी की बात कर रहे हैं, जब से हमें यह पता लगा है कि वास्तव में चांद की 'बनावट' क्या है, आप की चाची हमें चांद नजर आने लगी हैं ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

जगजीत, सुरेश, अवतार—दिल्ली : आपने जीवन में क्या खोया है और क्या पाया है ?

उ० : सच पूछिए तो न कुछ पाया है और न कुछ खोया है । हमारी हालत तो इस शेर जैसी है ।

सौ बार तेरा दामन हाथों में मेरे आया,
जब आंख खुली देखा अपना ही गिरेबां था ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

शिव शंकर पांडे—न्यू आगरा : गिरेबान फटते रहे, सर फूटते रहे । पर जनता पार्टी के 'बड़े-बड़े और घोंमू' नेता यह कहते रहे कि हममें कोई मतभेद नहीं है, हम एक हैं, हममें एकता है । फिर ऐसा हुआ कि राजनारायण नारद मुनि की तरह अपना कमंडल उठाकर नारायण-नारायण करते अपनी पूरी 'भगत मंडली' के साथ 'राज्य शिवाले' से बाहर आ गये । क्या अब भी जनता पार्टी के 'खेवनहार' यही कहेंगे कि हमारे सामने कोई खतरा नहीं है ?

उ० : खेवनहार पर हमें एक बात याद आ गई । एक बार पानी के जहाज पर सवार एक औरत भागती हुई जहाज के कप्तान के पास गई और हंसते हुए बोली । 'कहते हैं यहां समुन्द्र से ऊपर निकली बड़ी बड़ी चट्टानें हैं, जहां से हमारा जहाज इस समय गुजर रहा है । क्या आप विश्वास के साथ कह सकते हैं कि जहाज के सामने कोई खतरा नहीं है ? इस पर कप्तान बोला, 'देवी जी, चारों ओर गहरी धुन्ध छाई है । कुछ नजर तो आ नहीं रहा है । मैं बगैर देखे कैसे कह दूं कि हमारे सामने कोई खतरा है ।' इसी प्रकार हमारे खेवनहार भी कैसे मान लें कि सामने कोई खतरा है ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अनील कुमार गुप्त—तपकरा : डीयर अंकल, क्या आपको पागल कुत्ते ने काटा है, जो आप हमारे उल्टे सीधे प्रश्नों के उत्तर देते हैं ?

उ० : बात यहीं तक रहने दीजिये कि हमारे आपने काटा है ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

तहसीनुद्दीन, सुरेन्द्र कुमार मिश्र—जाफराबाद : प्यारे चाचाजी, क्या आप हमें अपनी सुन्दरता के बारे में कुछ बतायेंगे ?

उ० : दिल्ली आकर कभी तुगलकाबाद का टूटा-फूटा किला देखिये, जहां आजकल हजारों बन्दर आजकल के लीडरों की तरह उछल-कूद करते रहते हैं । इसे देख कर जब हम शीशे में अपनी शक्ल देखते हैं तो आपसे आप मुंह से निकल जाता है ।

"खंडर बता रहे है इमारत अजीब थी । और जब यह इमारत बहुत बढ़िया थी तब की बात सुनिये । कोई पच्चीस तीस साल पहले की बात है । जैसे हम आपके चचा हैं ऐसे हमारे भी एक चचा थे । हमारी शादी कराने के लिये एक बार हमें लड़की वाले के घर ले गये । पर हुआ यह कि उस लड़की ने हमारे चचा से शादी कर ली ।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

प्रकाश शर्मा, योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर, नागालेंड : बिन मांगे मोती मिले मांगे मिले न भीख । इसका क्या अर्थ है ?

उ० : जब तक दोबारा चुनाव लड़कर जनता पार्टी लोगों से दोबारा वोट मांगे, तब तक इस प्रश्न का उत्तर देना आसान नहीं है ।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

'कुछ दिन भी घर खाली रह जाए तो हजार कहानियां जुड़ जाती हैं—फिर उसने सोचा कि इतनी बड़ी कोठी की सफाई की समस्या कैसे हल की जा सकती थी जबकि कोई नौकर भी उपलब्ध नहीं था···

अभी दशरथ यह सोच ही रहा था कि उसके कानों से छन-छन की आवाजें टकराईं और वह अनायास उछल पड़ा···उसका दिल बहुत जोर से धड़का क्योंकि यह छन-छन की आवाज किसी के पैरों में बजने वाली पायल की आवाज के अतिरिक्त किसी की भी नहीं हो सकती थी। दशरथ को ऐसे लगा जैसे उसके पैर जहां के तहां जम कर रह गए हों···सांस जैसे घुटने लगी थी···पायल की झंकार धीरे-धीरे पास आ रही थी···और फिर···

फिर दशरथ ने देखा कि बरामदे के मुख्य प्रवेश-द्वार पर कोई औरत खड़ी थी और बाहर से आने वाली धूप के तेज प्रकाश में उसकी छाया लम्बी होकर दशरथ के पैरों तक पहुंच रही थी। दशरथ के रौंगटे खड़े हो गये और बदन में झुरझुरी-सी फैल गई···आवाज जैसे गले में ही घुट कर रह गई हो···आंखें स्थिर होकर उस पायल वाली औरत को घूरती जा रही थीं।

औरत के शरीर पर एक मैली-कुचैली ओढ़नी और घाघरा था···ओढ़नी से उसने अपना चेहरा छिपा रखा था। उसकी कलाइयों में हरे कांच की चूड़ियां थीं···टखनों पर चांदी की पायलें थीं···वह धीरे-धीरे अन्दर की ओर बढ़ने लगी···दशरथ को अपना लहू धमनियों में जमता हुआ-सा अनुभव हुआ। चलते-चलते वह औरत दशरथ से केवल तीन कदम के फासले पर पहुंच कर रुक गई और दशरथ की ऊपर की सांस ऊपर रह गई, नीचे की नीचे···उसका चेहरा सफेद पड़ गया था।

एकाएक औरत की कलाई में पड़ी चूड़ियों में हल्की-सी खनक हुई क्योंकि उसने अपना घूंघट ठीक किया था···फिर औरत की रुंधी आवाज उभरी—

'क्या देख रहे हो बाबू जी?' मैं कोई भूत-प्रेत नहीं हूं।'

दशरथ इस प्रकार उछल पड़ा जैसे सोते से जगा हो—औरत उसके चौंकने पर धीरे-से हंस कर रह गई और दशरथ ने अपने आप को संभाल कर पूछा—

कौन हो तुम?'

'बाबू जी मैं चम्पा की छोटी बहन रधिया हूं।'

'कौन चम्पा?'

'भंवरलाल जी के घर में झाड़ू-बरतन और सफ़ाई-सुधराई का काम करती है।

'ओह—!' दशरथ ने लम्बी और गहरी सांस ली।

'भंवरलाल जी ने मेरी बहन को बोला था कि आज से इस कोठी में कोई किरायेदार आने वाले हैं जो बिल्कुल अकेले हैं—शायद उन्हें किसी नौकरानी की आवश्यकता होगी, मैं यहां पास ही रहती हूं इसलिए मेरी बहन चम्पा ने कहलवा भेजा था—मैं शायद ठीक समय पर आ गई हूँ।'

हां ठीक है···' दशरथ ने कहा, तुम्हारा घर यहां से कितनी दूर है?'

'यहीं···पिछवाड़े में तो है झोंपड़ पट्टी में।'

'अकेली हो तुम?'

'अकेली कहां हूँ बाबूजी···मेरा पति है मेरे संग।'

'ओह···अच्छा, अच्छा···तो तुम यहां

'इसीलिए तो आई हूं—बाबूजी।'

'क्या तनख्वाह लोगी?'

'कुछ भी नहीं।'

'क्या मतलब?'

'मैं अपनी जुबान से कुछ नहीं मागूंगी जो तुम्हारा मन चाहे दे देना।

'ओह···अच्छा···अच्छा···' दशरथ ने कहा।'

'तुम ठहरो बाबूजी···मैं बाथ-रू साफ कर दूं—फिर तुम नहाना-धोना···जब तक मैं यहां की सफाई कर दूंगी। चम्पा दीदी ने बताया था कि यह कोठी बरसों से खाली और सुनसान पड़ी है···इसमें इतनी गन्दगी है।'

हां—मगर इस समय क्या बाथ-रूम में पानी होगा!'

'पता नहीं—देखती हूं।'

वह औरत वैसे ही घूंघट दबाए-दबाए बाथ-रूम की ओर चली गई। थोड़ी देर बाद दशरथ ने पानी के गिरने की आवाज सुनी। दशरथ जल्दी से इधर बढ़ा। अन्दर से रधिया की आवाज आई—

'पानी आ रहा है बाबूजी···मैं बाथ-रूम धो रही हूं—तुम तब तक कपड़े निकालो।'

दशरथ कपड़े निकालने लगा लेकिन उसे आश्चर्य हो रहा था कि जो बाथरूम वर्षों से बन्द था उसके नल में पानी कैसे आने लगा? दशरथ ने कपड़े निकाले और साबुन-तौलिया इत्यादि निकालकर तैयार हो गया। रधिया बाथरूम से बाहर निकल आई और बोली—

'जाओ बाबूजी, नहा लो।'.

'इतनी जल्दी साफ कर लिया?' दशरथ ने आश्चर्य से पूछा।

'हां बाबूजी, जहां मैं काम करती हूं वहां लोग मुझे बिजली कहते हैं—बिजली।

'सचमुच तुम तो बिजली ही मालूम होती हो।'

दशरथ बाथरूम की ओर बढ़ा तो रधिया ने चौंककर पूछा—

बाबूजी! इस बास्कट में क्या है?'

'इसमें कुछ बरतन और स्टोव इत्यादि हैं और चाय बनाने का सामान—अकेला रहता था न, सोचा कि चाय का सामान तो लेता ही चलूं।'

'तो क्या तुम यहां सदा अकेले ही

रहोगे ?'

'नहीं—मेरी बहन आगरा में बी० ए० में पढ़ती है···ज्यों ही वह बी० ए० कर लेगी मैं, माँ और बहन को भी बुला लूंगा।'

'ओह—!'

'अच्छा, मैं नहाने जा रहा हूँ···तब तक तुम सफाई करो।'

दशरथ बाथरूम में आ गया। वहाँ इतनी सफाई थी जैसे यह बाथ-रूम कभी खाली ही न रहा हो। दशरथ को हल्का-सा आश्चर्य हुआ···फिर उसने अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया और बाथटब का नल खोल दिया···पानी टब में भरने लगा···दशरथ नहाने के लिए कपड़े उतारने लगा—जब टब आधा भर गया तो दशरथ ने शैम्पू की शीशी खोलकर टब में शैम्पू डाला और उसमें झाग बनाकर पानी में घुस गया। कई दिन से उसे ठीक से नहाने को नहीं मिला था···चूंकि होस्टिल में रहता था इसलिए नहाने के लिए प्रायः लाईन लगानी पड़ती थी—

इस समय टब में नहाते हुए दशरथ को अनोखा-सा आनन्द मिल रहा था···न जाने वह कितनी देर तक नहाता रहा। फिर जब उसने शावर का स्विच खोला तो शावर में से पानी निकला ही नहीं। दशरथ बौखला गया। काफी देर तक उसे शावर से पानी आने की प्रतीक्षा करनी पड़ी···अभी वह रधिया को पुकारने का प्रयत्न कर ही रहा था कि अचानक शावर में पानी आ गया और दशरथ नहाने लगा। नहाते समय वह यहां के पड़ोसियों के बारे में सोचने लगा जिन्होंने उसको इस कोठी के बारे में विचित्र बातें बताई थीं···उसे भंवरलाल की नीयत पर सन्देह होने लगा था···लेकिन रधिया के आ जाने से उसके मन से सारे सन्देह दूर हो गए थे। स्पष्ट है कि अगर पड़ोसियों की बातें ठीक होतीं तो भंवरलाल उसके लिए नौकरानी का प्रबन्ध क्यों करता—सब बकवास है—लोगों का भ्रम है···या फिर किसी कारण से कोई पड़ोसी ही यह कोठी खाली रखवाना चाहता है और उसने इस प्रकार की झूठी अफवाहें फैलाई हैं।

दशरथ को पता नहीं चला कितनी देर तक वह नहाता रहा था···फिर जब वह कपड़े पहनकर बाहर निकला तो उसकी आंखें आश्चर्य से फैल गईं। हॉल बिल्कुल साफ और चमक रहा था···वह टूटी-फूटी

खस्ता मेज़ गायब थी—दीवारों की तस्वीरें नहीं थीं और कहीं किसी जाले का निशान नहीं था···फर्श साफ और चमकता हुआ था बरसों की जमी मिट्टी की परतें न जाने कहां चली गईं···

दशरथ के नथुनों से ताजा चाय बनने की सुगन्ध टकराई वह कुछ देर वहीं खड़ा रहा···फिर उसने बाथरूम का द्वार बन्द किया तो किचन की ओर से रधिया की आवाज गूंजी—

'बाबूजी···नहा चुके ?'

दशरथ ने उत्तर दिया—

'हां···नहा चुका।'

'मैं यहाँ किचन में चाय बना रही हूं-अभी आती हूँ।'

दशरथ अपने सामान की ओर बढ़ा। कुछ ही देर में राधा ट्रे में चाय की प्याली और कुछ बिस्कुट रखे आती दिखाई दी। दशरथ अभी हॉल की सफाई देखकर चकित हो रहा था।

रधिया ने उसकी आंखों में आश्चर्य को देख लिया था—वह बोली—

'सफ़ाई ठीक हुई है बाबूजी ?'

'हां—लेकिन इतनी जल्दी ?'

'मैंने बोला था न बाबूजी···लोग मुझे बिजली कहते हैं।'

दशरथ के होंठों पर मुस्कराहट फैल गई और उसने कहा—

'तब तो तेरा नाम बिजली ही होना चाहिए था।'

रधिया हँसकर रह गई···दशरथ ने फिर कहा—

'लेकिन तूने अपना चेहरा क्यों ि
रखा है ?'

'यह न ही पूछो बाबूजी तो अच्छा
'लगता है तेरा पति बहुत शंका
स्वभाव का है।'

'अब आप कुछ भी सोचें बाबूजी।

दशरथ चाय और बिस्कुट लेने
कुछ देर तक रधिया खड़ी रही और
बोली—

'अच्छा बाबूजी···अब मैं जाऊँ ?'

'ठीक है, जाओ।'

रधिया चली गई। दशरथ जब
पी चुका तो सोचने लगा कि उसने र
से यह तो पूछा ही नहीं कि अब वह
आएगी ? यहाँ लगातार काम करेगी
नहीं ? फिर उसने सोचा कि अब वह
ही काम करने आई है तो अवश्य फिर
आएगी। चाय पीकर उसने सिगरेट सु
और पूरी कोठी का निरीक्षण करने ल
सचमुच रधिया ने पूरी कोठी साफ कर
थी···लेकिन इतनी जल्दी उसने यह सब
कर दिया था, इस पर दशरथ को आ
था···फिर वह स्वयं ही मुस्कराकर बड़ब
'सचमुच बिजली है···बिजली।'

बुझे हुए सिगरेट को फर्श पर डा
उसने जूते से रगड़ा···उसे अपने हाथ
अंगूठे की खरोंच में हल्की सी जलन
पीड़ा अनुभव हुई। उसने अटैची से डि
की शीशी निकालकर घाव पर थोड़ी
लगा ली। कई दिन का थका हुआ य

होस्टल में कुछ शोर रहता था इसलिए नींद ठीक नहीं होती थी। दशरथ सामान उठाकर उस कमरे में आ गया जहाँ वह बैड-रूम बनाना चाहता था···यहाँ कोई चारपाई नहीं थी। उसने फर्श पर ही बिस्तर लगाया और लेट गया···फिर लेटते-लेटते ही उसकी आंख लग गई···थकन के कारण उसे होश नहीं रहा कि वह कहाँ पड़ा है—वह सचमुच बहुत गहरी नींद सोया था।

●

दशरथ की आँख खुलीं तो कमरे में हल्का-हल्का अंधेरा फैला हुआ था। कुछ क्षण तक वह उसी दशा में बिना हिले-जुले लेटा रहा···फिर उठकर बैठ गया। कलाई की घड़ी देखी···शाम के छै बजे थे। उसे अपनी आंखों से गरम-गरम भाप-सी निकलती अनुभव हो रही थी। उसने अपनी गर्दन छूकर देखी···कलाई पर हाथ रखा···ऐसे लग रहा था उसे हल्का-हल्का बुखार था। हाथ के घाव में कुछ अधिक ही टीस थी···दायाँ हाथ था···दशरथ ने सोचा···अगर घाव बढ़ गया तो काम भी न हो सकेगा इसलिए उसने फैसला किया कि डाक्टर से बैंडिज करवा लेनी चाहिए।

दशरथ ने बाहर जाने के लिए कपड़े बदले और बाहर आकर बरामदे वाले द्वार में ताला लगा दिया···फिर फाटक से निकल कर फाटक को यूँही बन्द कर दिया···पहले एक गहरी दृष्टि उसने इधर-उधर दौड़ाई लेकिन उसे आस-पास कोई व्यक्ति अपनी ओर आकृष्ट दिखाई नहीं दिया। दशरथ सड़क पर चल पड़ा। मुसीबत यह थी कि वह इस क्षेत्र में पहली बार आया था इसलिए उसे पता नहीं था कि डाक्टर किस ओर मिल सकेगा। वह सड़क पर इधर-उधर देखता हुआ चलने लगा कि कोई राहगीर मिले तो उससे पूछे।

सहसा दशरथ को अपने पीछे साइकिल की तेज घंटी की आवाज सुनाई दी। दशरथ ने जल्दी से एक ओर हटते हुए पलट कर देखा—वही लाल कपड़ों वाली लड़की थी जो एक रेसिंग साइकिल पर झुकी हुई चली आ रही थी। दशरथ पर दृष्टि पड़ते ही उस लड़की के गले से चीख निकली···उसने जल्दी से ब्रेक लगाए कि साइकिल उछल कर गिर पड़ी···लड़की दूर जा गिरी थी। दशरथ झट उसकी ओर लपका और उसे उठाने के लिए झुकने लगा तो लड़की डर से चिल्ला पड़ी—

'भूत···भूत···।'

दशरथ रुक गया। लड़की जमीन पर बैठे-बैठे ही पीछे सरकती जा रही थी और डरी-डरी दशरथ की ओर देखे जा रही थी। दशरथ ने एक ठंडी सांस ली और बोला—

'देवी जी···आपको भूल हुई है···मैं भूत नहीं हूं।'

लड़की दोनों हाथों को सड़क पर टिका कर खड़ी हो गई और अपनी जीन और पुलओवर झाड़ने लगी। दशरथ ने पलट कर उसकी साइकिल उठाई और जब वह लड़की की ओर पलटा तो उसने विस्मित होकर देखा···लड़की धनुष से निकले बाण के समान भागती हुई अपनी कोठी की ओर जा रही थी। दशरथ ने साइकिल को देखा और फिर उस लड़की की ओर देखा जो अब कोठी में प्रविष्ट हो चुकी थी। वह कुछ देर तक खड़ा सोचता रहा, फिर साइकिल उठाकर लड़की की कोठी की ओर चल पड़ा।

फाटक के पास पहुंचकर दशरथ ने एक हाथ से फाटक खोला फिर साइकिल लेकर अन्दर जाने लगा तो सामने खड़े बूढ़े कर्नल को देखकर ठिठक कर रुक गया। कर्नल के हाथ में बन्दूक थी और वह तेजी से बरामदे से उतर रहा था···लड़की दरवाजे में से झांक रही थी···दशरथ पर दृष्टि पड़ते ही उसने फुर्ती से दरवाजा बन्द कर लिया था। कर्नल वहीं खड़ा होकर दशरथ की ओर बन्दूक तानकर बोला—

'हाल्ट—!'

दशरथ ठिठकर रुक गया। कर्नल ने बन्दूक ताने-ताने कहा—

'साइकिल छोड़ दो—।

दशरथ ने साइकिल छोड़ दी जो एक ओर जा गिरी। कर्नल फिर दहाड़ा—

'हाथ ऊपर उठाओ।'

दशरथ ने हाथ ऊपर उठा दिए और कर्नल धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ता हुआ बोला—

'खबरदार कोई हरकत की तो गोली मार दूंगा।'

दशरथ बड़े सन्तोष से खड़ा रहा। कर्नल दशरथ से चन्द कदम पर रुक गया और गुर्राकर बोला—

'एक हाथ आगे बढ़ाओ।'

दशरथ ने एक हाथ आगे बढ़ा दिया। कर्नल ने दाएं हाथ से बन्दूक संभाले-सँभाले दशरथ का बायां हाथ छूआ और फिर बोला

'थोड़ा और आगे बढ़ो।

दशरथ और आगे बढ़ गया। कर्नल ने दशरथ की कलाई भी छूकर देखी और आश्चर्य से बोला—

'हाथ तो गरम है।'

'जी—!' दशरथ ने आश्चर्य से कहा।

'फिर वन्दना तुम्हें भूत [illegible] समझी थी ?'

दशरथ ने ठन्डी सांस ली और कर्नल ने डपटकर कहा—

'बताओ ना···।'

दशरथ उछल पड़ा और बेबसी से बोला

'भला मैं क्या बता सकता हूं ?'

'बात क्या थी ?'

'जी कुछ भी बात नहीं थी—' दशरथ ने कहा, 'मैं डाक्टर के पास जाने के लिए निकला था···सड़क पर जा रहा था तो वह पीछे से साइकिल पर आई···घंटी बजाई मैंने पलट कर देखा तो चीख मारकर गिर पड़ी और भूत-भूत चिल्लाने लगी—मैंने साइकिल उठाई तो साइकिल छोड़कर ही भाग आई—मैंने सोचा साइकिल घर पर ही पहुंचा दूं।'

'गुड—' कर्नल ने बन्दूक नीची करते हुए कहा।' हाथ नीचे कर लो।'

दशरथ ने हाथ गिरा लिए तो कर्नल ने पूछा—

'लेकिन तुम डाक्टर के पास क्यों जा रहे थे ?'

'जी—मेरे हाथ में खरोंच पड़ गई थी जिसमें जलन है और हल्का-सा बुखार भी···।'

'बुखार···!'

कर्नल ने चोंककर दशरथ की कलाई पकड़ी और बोला—

'ओहो···तुम्हें तो काफी बुखार है।'

'जी हाँ—मुझे यहाँ किसी डाक्टर का पता मालूम नहीं था।'

'डाक्टर का पता मालूम नहीं था ?' कर्नल दशरथ को घूरकर बोला।

'जी हां···'

'तो क्या मैं डाक्टर नहीं···घसियारा हूँ ?' कर्नल बिगड़ कर बोला।

'ज···ज···जी···म···म···मैं···।' दशरथ बौखला गया।

शेष पृष्ठ ४० पर
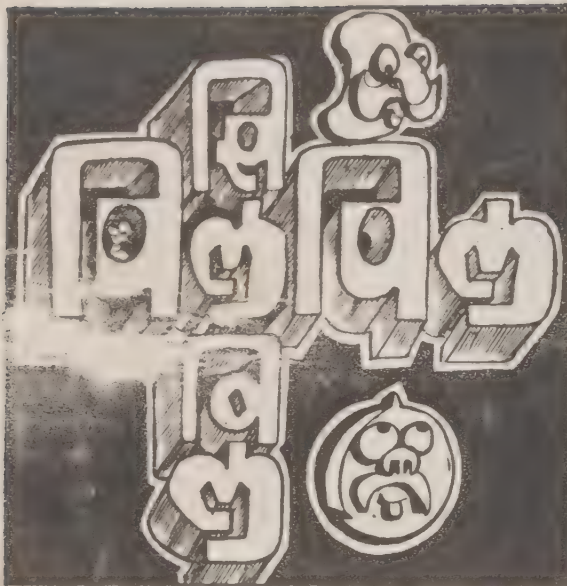
गरीब चन्द, साहब लोग आफिस नहीं आया ?
साहब लोग नहीं आयेगा मिस रू कल गांव से खबर आया कि इनके की टूटे सींग वाली भैंस ने कटड़ा दिया है। इस खुशी में रात उन्हो खूब रम पिया और औंधे हो गए अभी तक नहीं उठे। उनकी नाकों ऐसी आवाज आ रही है जैसे डीज इंजन चल रहे हों।

लेकिन, यहां तो एक जरूरी केस आया है। सेठ धर्मचन्द की लड़की पिंकी फौरन हमसे एक बॉडी गार्ड चाहती है।
यह तो आपको खुद करना पड़ेगा। उनके वस का नहीं है य रोग। वह आते तो भी यहां आइसक्रीम खाने के सिवा औ काम नहीं करते। भेजना तो उन्होंने आपको ही था। आप जाइये यहां दफ्तर मैं सम्भाल लूंगा। मोटी आसामी है!
ठीक है! मेरा जाना ही ठीक है। लड़की के लिये बॉडी गार्ड लड़की ज्यादा ठीक भी रहेगी। वह बहुत घबराई हुयी लग रही थी। मुझे देरी नहीं करनी चाहिये।
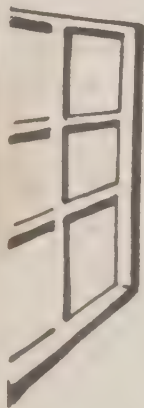
लेकिन रूबी के पहुंचने से पहले ही
पिंकी ! यह क्या खून ? पीठ में छुरा घोंपा गया है ।
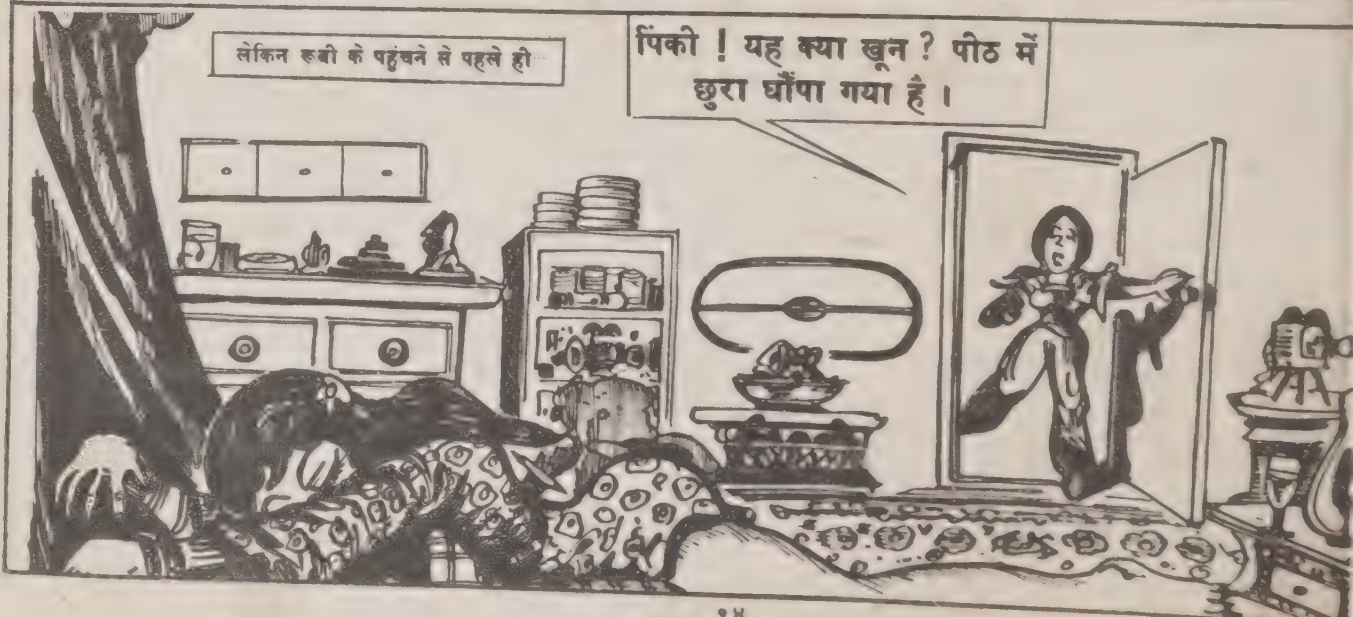
अब मुझे यहां अधिक देर नहीं ठहरना चाहिए। सरसरी तौर से जो मुझे देखना था- वह देख लिया। किसी चीज को मैंने हाथ भी नहीं लगाया। सबसे पहले पुलिस को टैलीफोन···फिर सेठ जी के पास।
क्या कहा तुमने ? पिंकी का खून ?
अभी अपनी आंखों से देख कर आ रही हूं सेठ जी।
तुम्हें गलती हुई है। यह नहीं हो सकता
नहीं !
सेठ जी, पिंकी ने बॉडी गार्ड के लिये हमारी जासूस कम्पनी को फोन किया था। जब मैं वहां पहुंची तो उसका खून हुआ पड़ा था।
कौन कर सकता है मेरी मासूम बच्ची का खून ? क्या मिलेगा किसी को ? मैंने उसे हमेशा बड़ी-बड़ी किताबें उठाये देखा। हमेशा किताबों के पीछे लगी रहती थी। मैं कहा करता था किताबों में मत डूबो, इतना अपने आपको। उसने कभी नहीं माना। उसे लिटरेचर में डाक्टरेट करने की धुन थी। पढ़ाई के लिये ही उसने अलग फ्लैट ले रखा था किराये पर। महीने में कुल मुझसे सात सौ रुपये ले जाती थी। कोई फिज़ूल खर्ची नहीं। कभी किताबों के सिवा किसी से मतलब नहीं। कौन क्यों मारेगा ऐसी नादान बच्ची को ?
सेठ जी पिंकी को शेयर वगैरह से भी पैसे मिलते थे ?
नहीं, नहीं, नहीं, कोई पैसे नहीं ! मेरी बच्ची फिज़ूल खर्ची नहीं थी। वह तो सात सौ में सारा गुजारा कर लेती थी।
सेठानी, यानि पिंकी की सौतेली मां भी पिंकी के बारे में कुछ नहीं बता सकी। कहती है केवल दो तीन बार मुलाकात हुई है पिंकी से बस।
यह सब क्या घोटाला है ? सेठ कहता है पिंकी मासूम नादान बच्ची है। केवल सात सौ में गुजारा करती है। सेठ जी ने खुद कभी उसका फ्लैट नहीं देखा। उसके फ्लैट का किराया ही पन्द्रह सौ रुपये से कम नहीं होगा और उसके फ्लैट में जो फर्नीचर और सामान है वही लाखों रुपये का होगा। कहां से आया उसके पास पैसा ?
मिस रूबी, यह लो आपके नाम यह दस्ती चिट्ठी आई थी। जरूरी न हो इसलिए मैंने खोल कर पढ़ लिया, लिखा है 'पिंकी के मामले में टांग मत अड़ाओ। वर्ना अच्छा नहीं होगा।
वार्निंग है ?
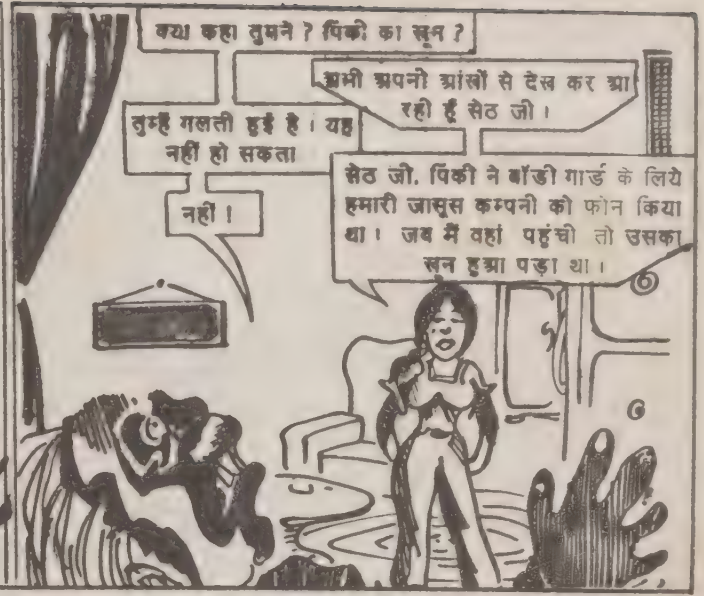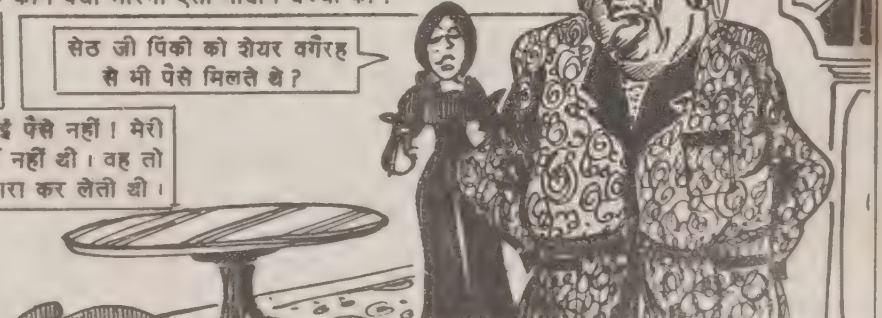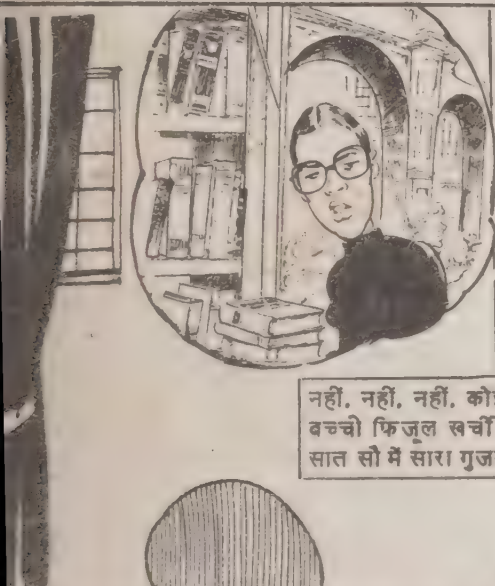
रूबी को नींद नहीं आती।
यह चक्कर क्या है ? पिंकी का कमरा इतने कीमती माल असबाब से भरा है। सेठ उसे कुल सात सौ रुपये देता है। कहां से आता है पिंकी के पास पैसा बाप क्या सचमुच बेखबर है ?
और सेठानी कहती है कि वह अपनी सौतेली लड़की को ठीक तरह जानती भी नहीं।
मामला काफी रहस्यमय है। पिंकी के कमरे की गहरी छानबीन से कुछ पता लग सकता है। दरवाजा पुलिस ने सील कर दिया होगा। मुझे खिड़की से अन्दर घुसना पड़ेगा।

अरे यहां तो कमरे में कोई और भी है। कुछ खोज रहा है। एकदम लाइट जला कर चौंका दूं इसे।
कौन ? तुम यहां क्या कर रही हो ?
वाह सेठानी जी आप ?
मेरी भी वही हॉबी है जो आपकी है। मरी हुयी लड़कियों के कमरे की तलाशी लेना आधी रात को।
नहींऽऽऽ। तुम नहीं समझोगी।
क्या तुम जान कर ही रहोगी ?
तुम नहीं समझोगी, अब तो आपको समझाना ही पड़ेगा। मेरा तो पिंकी के बॉडी गार्ड होने के नाते यहां होना स्वाभाविक है। उसने हमें एक महीने के लिए हॉयर किया था। बेशक वह मर चुकी है लेकिन आप तो पिंकी को ठीक तरह जानती भी नहीं थीं। कुल दो-तीन बार मुलाकात हुई थी तो यहां उसके कमरे में क्या कर रही हैं ?

मैं एक बहुत गरीब परिवार की लड़की हूं। सारा बचपन अभावों में बीता। कुछ बड़ी हुई तो मिल-मिला कर थोड़ा-सा डांस सीखा और कबीना रैस्टोरेन्ट में कैबरे डांसर बन गई। डांसर बनने के बाद पता लगा कि कैबरे डांसर की जिन्दगी कितनी जलील होती है, लेकिन अपने बूढ़े मां-बाप की खातिर दस साल तक करती रही। उस जिन्दगी रूपी नर्क से छुटकारा पाने के लिये छटपटाती रही इतने में विधुर सेठ धर्म चन्द अपने मित्रों के साथ वहां आने लगे. उन्होंने मुझसे विवाह का प्रस्ताव किया. मैं झट से मान गई जैसे अंधे को दो आंखें मिली हों। मां बाप भी सुखी रहते। बूढ़े सेठ से मुझे सब कुछ मिला सिवा प्यार के। रेस्टोरेन्ट में काम करने के दौरान वहां के सटुअर्ट नाथ से मेरी मित्रता हो गयी थी। बाद में भी कभी-कभी वह मुझसे मिलता रहा। एक दिन जब वह मुझे कोठी के पीछे वाले बाग में मिला तो पिंकी ने मूवी कैमरे से उसके साथ मेरी फोटो ले ली और उसके बाद वह मुझे ब्लेकमेल करने लगी। मैं उसे चुपचाप पैसे देती रही. तकरीबन दो वर्ष तक देती रही।

बाकी कहानी अगले अंक में!

आपके पत्र

'दीवाना' का नया अंक २० पढ़ा। मुखपृष्ठ पर चिल्ली को देखते ही हंसी रोकते हुए भी न रूक सकी। चिल्ली-लीला, चना कुरमरा, मोटू-पतलू, आ हा हा और परोपकारी ने हंसा-हंसाकर, पेट में दर्द कर दिया। आशा है आगामी अंक भी इसी तरह हास्य-रस से भरपूर होंगे।

प्रकाश जयसिघानी—अजमेर

दीवाना अंक १९ पढ़ने को मिला, पढ़कर दिल खुशी से झूम उठा! क्योंकि इस अंक में फिल्मी तर्ज पर एक कहानी पढ़ने को मिली। यह कहानी मुझे बहुत पसन्द आयी। इसके साथ-साथ नया धारावाहिक उपन्यास "मोनिका" का भाग १२ भी पढ़ा। मेरी तरफ से लेखक संगीताको बहुत-बहुत धन्यवाद। यह अंक मुझे बहुत मजेदार लगा इसमें फिल्म "आधा दिन आधी रात" का परौडी भी पढ़ने को मिली। अतः दीवाना की जितनी भी तारीफ करें वह थोड़ी ही होगी!

कुर्शन हवारी—नेपाल
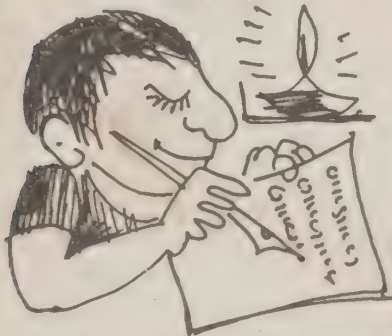
अंक नं. १९ का मुख पृष्ठ देखा तो मुझे बहुत जोर से हंसी आई। और "बन्द करो बकवास", "मदहोश" मोटू-पतलू, बहुत पसन्द आये। सचमुच आपकी पत्रिका हास्य व्यंग्य की एक अनूठी पत्रिका है। आपकी पत्रिका से केवल हंसी ही नहीं बल्कि ज्ञान भी प्राप्त होता है। चूंकि मैं साइन्स वाला विद्यार्थी हूं इसीलिये मुझे "क्यों और कैसे" स्तंभ बेहद पसन्द आता है।

दयाशंकर सोनी—जबलपूर

लगभग एक सप्ताह के बाद "दीवाना" अंक न. १८ प्राप्त हुआ। चूंकि आप कहते हैं कि दीवाना अब निश्चित तिथि को निकलेगा इस तरह का वादा जनता पार्टी के वादे जैसा है। इतना देर से आने के कारण दीवाना प्रेमी कभी-कभी खीझ उठते हैं। यह अंक भी लाजवाब रहा आधा दिन आधी रात, सिलबिल और पिलपिल, कहावतों पर दीवाना सोच-विचार और मैंने इलेक्शन लड़ा इत्यादि समाग्री-हास्ययुक्त थी। कुछ पाठक "फेंटम" को बन्द करने के लिए कहते हैं। यह पढ़कर मुझे दुख होता है। यह जानकर खुशी भी होती है कि "दीवाना" उनकी बातों पर ध्यान नहीं देता है। फेंटम के पीछे कूपन देना बेकार है क्योंकि यह चित्रकथा संग्रह करने योग्य होती है। अगले अंक के इन्तजार में।

राजकुमार—पटना

'दीवाना' का तरोताजा अंक आज ही प्राप्त हुआ 'दीवाना' का वो हर एक अंक जो आप के यहाँ से निकलता है मैं बड़े शौक के साथ पढ़ता हूं यदि मुझे एक अंक प्राप्त करने के लिए सौ तरह के पापड़ क्यों ना बेलने पड़ें। 'दीवाना' को यदि कोई बच्चा पढ़ता है तो वो भी वाह-वाह करता है। इसी तरह कई युवा और बूढ़े लोग पढ़ते हैं, उनके मुंह से भी वाह क्या कहने ही निकलता है। जिन्हें 'दीवाना' देर से प्राप्त होता है वो बेचारे ना जाने एक दिन में कितने चक्कर किताबों की दुकानों के लगाते हैं?

भूपेन्द्र देवगुन—अन्धा मुगल

दीवाना अंक २० ठीक वक्त पर प्राप्त हुआ। चिल्ली महाशय ने जिस खूबसूरती से आवाज की पगड़ी बना कर पहनी वह वाकई ही तारीफ के लायक है। बंद करो बकवास, चिल्ली लीला, फेंटम, चना कुरमुरा और छुट्टन-मिट्ठन वाकई ही दीवाना को सजाए हुए हैं। दीवाना में मेरी ख्वाइश है कि एक प्रतियोगिता रखी जाए कि दीवाना में क्या-क्या कमियां हैं, जो सबसे खबसूरत पत्र लिख कर भेजे १५ रु० इनाम स्वरूप दिये जायें।

कमलकांत जैन—दिल्ली-१

आपका सुझाव विचारणीय है। —सं०

अपनी प्रिय पत्रिका 'दीवाना' का नया अंक नं. १९ पढ़ा। इस अंक में चिल्ली लीला, प्रेम पत्र, फिल्म पैरोडी, मोटू पतलू और बच्चा झमूरा ने तो हंसाया। इसके अलावा खेल खेल में स्तम्भ से हमें विश्वकप हाकी के बारे में बहुत सारी जानकारी मिली। आगामी अंक के इंतजार में—

प्रकाश जयसिघानी—अजमेर

दीवाना का नया मदमदाता अंक नं. १९ पढ़ा। मुख पृष्ठ काफी रोचक था तथा अगले पृष्ठ पर चिल्ली का पुरानी पैन्टो का उत्तम सुझाव पसन्द आया। मोटू-पतलू की नई कहानी बेहद अच्छी है। पिलपिल सिलबिल के लम्बे चौड़े हंसाने वाले कारनामों ने प्रत्येक दीवाना में बहुत हँसाया! "बच्चा झमूरा फिल्म में" व दीवाना फीचर "कहावतों पर दीवाना सोच विचार" बहुत पसन्द आये "फिल्मी तर्ज पर एक कहानी" बहुत मजेदार थी। यदि आप इसे प्रत्येक सप्ताह दें तो दीवाना में चार चांद लग जायेंगे। अन्त में यही कहूंगा कि श्री जगजीवन राम के नाम चिल्ली का पत्र अच्छा था।

दिनेश मटाई—इन्दौर

दीवाना का अंक न० १९ मिला, चिल्ली को अपनी चुटिया से दिया जलाते देखकर बड़ी हँसी आई। चिल्ली लीला, फिल्म पैरोडी, मोटू-पतलू, फैन्टम आदि बड़े अच्छे लगे। धारावाहिक उपन्यास मोनिका का अंतिम भाग बड़ा रोचक था। आप से अनुरोध है कि आप गुमनाम है कोई प्रतियोगिता हर अंक में दिया करें। दीवाना इस बार गया में दो सप्ताह लेट पहुंचा। आपने तो कहा था कि दीवाना अब लेट नहीं पहुंचेगा। क्या आप भी जनता पार्टी की तरह आश्वासन देने लगे हैं?

राजेश प्रसाद गया—मखलोट गंज

दीवाना का नया अंक नं० १९ प्राप्त हुआ। चिल्ली की चुन्डी में एमर्जेंसी लाइट जलाकर पढ़ने पर बहुत हंसी आई। मोटू-पतलू तथा सिलबिल पिलपिल और मोनिका बहुत अच्छा लगा। कृपया अन्तिम पृष्ठ पर फिल्मी सितारों की जगह किसी क्रिकेट खिलाड़ी की फोटो छापें तो बहुत मेहरबानी होगी।

नदीम अहमन —मुगल सराय

डा० झटका का नया प्रयोग

सरकार नये-नये उपयोगी आविष्कारों पर वैज्ञानिकों और डाक्टरों को पुरस्कार देती है। डा० झटका बहुत दिनों से सरकारी पुरस्कार पाने के इच्छुक थे। पिछले दिनों उन्हें यह अवसर मिल गया। डा० झटका ने अपनी आँखों की सुर्मेदानी खोल कर जनता सरकार की अन्दरूनी हालत देखी तो पता चला कि बड़े-बड़े नेता एक दूसरे की टांग खींच रहे हैं और एक दूसरे का विरोध कर रहे हैं। आज समय की सबसे बड़ी माँग है। एक ऐसी दवा का आविष्कार जिसके प्रयोग से आदमी किसी भी बात का विरोध करना छोड़ दे। डा० झटका ने सोचा कि विरोध निरोधी दवा बन जाए तो बड़े-बड़े नेता इसे अपने दुश्मनों को खिला कर एक बहुत बड़ी मुसिबत से छुटकारा पा जाएंगे। फिर न कोई मंत्रीपद से हटाये जाने पर चपरासियों जैसे सलूक की शिकायत करेगा। न जलसे जलूस और रैली का आयोजन किया जायेगा और न कोई नारा लगायेगा कि मेरे पास फलां मंत्री के बेटे की धांदलियों की फाइल है। जिसे वह दवा खिला दी जायेगी वह खरगोश की तरह बेजुबान होकर और कबूतर की तरह सुकड़ कर अपने दड़बे में बैठा रहेगा। यह इतना बड़ा आविष्कार होगा कि इसके लिये सरकार जितना बड़ा इनाम दे उतना ही कम है। इसके लिये डा० झटका बाजार से ढेर सी किताबें और अजीब-अजीब दवाइयां उठा लाये और अपनी नर्स सिस्टर हेमा और कम्पाउन्डर नैनसुख के साथ मिल कर विरोध निरोधी दवा पर रिसर्च शुरू कर दी।

जहां इतनी बड़ी रिसर्च हो रही हो वहां भला घसीटाराम जी कैसे निठ्ठले बैठ सकते हैं। उनका तो असूल है, "जहां पे देखी तवा परात, वहीं बिताई सारी रात।" विरोध निरोधी दवा का नुस्खा हथियाने के लिये वह तुरन्त डा० झटका के पास पहुंच गये।

इतनी दवाएं हैं और इतनी किताबें हैं।.....

दर्ज़ीमास्टर गाईड

बिजली के झटके

अगर हर दवा का असर देखने के लिये ऐसे ही बहस करोगे तो कैसे काम चलेगा ?

काम तो पता नहीं चलेगा या नहीं। मेरा काम तमाम होने पर मैं दुनिया से चलता बनूंगा। क्या यहां से भाग जाऊं ? भागना तो मुश्किल नहीं है। पर यह जो कीमती नुस्खा बना रहे हैं, वह हाथ से निकल जाएगा।

खाओ-खाओ, थोडा सा निगल जाओ। इससे मौत नहीं आ जाएगी।

[illegible] में...."आख, थू" का असर हुआ [illegible]

आख थू...

सर चकरा गया है। मेरे दिमाग में सितारे घूम रहे हैं।

क्या उल्लूओं जैसी बातें कर रहे हो। फिल्मी सितारे घूम रहे होंगे। इनमें जीनत अमान और शशि कपूर भी हैं क्या ?

अगर ऐसी बात है तो दीवाना के सभी पाठक साबुन की टिक्की खाकर बड़े-बड़े फिल्मी सितारों से मिल लिया करेंगे।

अगर यह बात न होती तो "लक्स" वालों को क्या पड़ी थी जो वे अपने हर विज्ञापन के साथ फिल्म अभिनेत्रियों की फोटो छापते ?

विरोध निरोधी दवा में साबुन डाला जाएगा। यह हमारे प्रयोग की पहली सफलता है। जो सितारे तुम देख रहे हो दवा खाने वाला उन सितारों के झुर्मुट में घिरा रहेगा और उसे विरोध करने की फुर्सत ही नहीं मिलेगी।

चलो अब अगली दवा पर रिसर्च करो।

क्या मतलब है ? अब मुझे फुनायल पिलाओगे तुम ?

पेट की सफाई के लिए। फुनायल भी तो सफाई के काम में आती है। इसके बाद "फ्लिट" और "डी० डी० टी०" का नम्बर आएगा।

गैंडा छाप फुनाएल

नहीं, नहीं। इतनी कीमती चीजें हम एक लल्लू पंजू आदमी पर जाया नहीं कर सकते। सबसे पहले हमें यह देखना होगा कि आदमी की मशीन में विरोध करने वाले पार्टस कौन-कौन से हैं।

पर आप तो "एनाटमी" की बजाये "आटो मोबाईल" की किताब पढ़ रहे हैं डाक्टर साहब ।
यही तो तुम नहीं समझती हो सिस्टर, आदमी के जिस्म और मोटर के इंजन में कितनी सामान्यता है । गाडी का "कार्बोरेटर" आदमी का लीवर है । गाड़ी का "फ्यूल टैंक" आदमी के जिस्म का पेट है । "हैड लाईट" हमारी आंखें हैं । गाड़ी का हार्न हमारा मुंह, वह अगर "साईलेंस जोन" में भी बजता ही जाये और गाड़ी को ब्रेक न लगे तो उसकी वही हालत होती है जो राज नारायण की और उसके मुंह की हुई है ।
तो क्या मुझे गाड़ी का इंजन समझकर अब मोबिल आयल और पैट्रोल पिलाओगे तुम ?
नहीं । हम बेसिक थ्योरी पर विचार कर रहे हैं । गाड़ी का इंजन "चार सलंडर" से हरकत में आता है । तो आदमी भी अपने चार हाथ पांव के सलंडर से हरकत में आता है ।
मोटर इंजन गाईड

अब यह देखना है कि किन हालात में गाड़ी का इंजन चलते-चलते काम करने से इंकार कर देता है ।
पहली हालत तो यह है कि गाड़ी का इंजन "ओवर फ्लो" हो जाए ।
हां, इसका मतलब है । हमें जिस आदमी को ठीक करना हो उसे ओवर फ्लो करना होगा । मतलब है अगर उसे दो चमचे दवा पिलानी हो तो हम दो बाल्टी पिलाने का मशवरा देंगे ।

बाल्टी दवाई ! तजुर्बे के लिये पहले मुझे पिलाएगें । अब भी मौका है । क्या भाग जाऊं यहां से ? नहीं नुस्खा हाथ से निकल जाएगा ।
तुम्हारी जगह कोई घटिया से घटिया उल्लू भी होता तो यहां एक सैकिंड नहीं टिकता ।

चलो, जो मैंने पहला नुस्खा तैयार किया है उसके अनुसार सब चीजें मिलाते रहो । सबका असर एक साथ देख लेंगे ।
इसने अभी से किसी बात का विरोध करना छोड़ दिया है ।
इसका मतलब है विरोध निरोधी दवा की खुश्बू से ही इस पर कुछ-कुछ असर होने लगा है ।

दवा बन कर तैयार हुई तो घसीटाराम के मुंह में उड़ेली जाने लगी।

दवा का असर कितनी तेज़ी से हो रहा है।

यह तो कुछ भी नहीं है। तुम चाय का कप इसके सर पर उलट दो यह तब भी कुछ नहीं कहेगा।
चलो प्रधान मंत्री को बतायें। हमने उनकी बहुत बड़ी और जटिल समस्या का समाधान कर दिया है।

जैसे ही नैन सुख का हाथ घसीटाराम से टकराया,

वह पल्टा कर कहीं से कहीं जा पड़ा

चोट लग गई बेचारे के। पर अब भी कितना शांत है। न कोई विरोध कर रहा है, न रैली निकालने को कह रहा है, न कोई खुफिया फ़ाईल का राज खोलने का शोर मचा रहा है।
टांग पर चोट लग गई है। अब इसकी मरहम पट्टी तो कर दो।

डाक्टर साहब, चोट घसीटाराम की टांग पर लगी है पट्टी आपने खाट के पैरों के बांध दी है।

लिटाओ इसे खाट पर, मैं दोबारा पट्टी बांध दूंगा ।

लो अब तो इसकी टांग पर कसकर बांध दी पट्टी ।

यह क्या किया डाक्टर साहब टांग के साथ खाट का पाया भी पट्टी के साथ बांध दिया है ।

क्या हो गया है ? तुम्हें अपनी फूटी आँखों से कुछ दिखाई नहीं देता सिस्टर । पहले से क्यों नहीं बतातीं कि क्या गड़बड़ हो रही है ।

लाओ अब मैं आरी से काट कर पाया अलग कर दूं ।
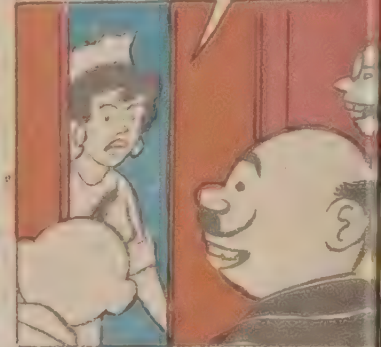
इस खाट का पाया अलग हो गया था । देखो हमने कैसा शानदार पाया लगा दिया है ।

देखो, वह घसीटाराम जो बात-बात पर काट खाने को दौड़ता था, अब किसी बात का विरोध नहीं कर रहा है ।

हमारी विरोध निरोधक दवा का प्रयोग सफल रहा है ।

डाक्टर झटका जिन्दाबाद

कम्पाउन्डर नैन सुख जिन्दाबाद

हमते हसते आपके पेट में कुछ कम दर्द हुआ हो तो आगामी अंक [illegible] मिलिए और खाट के [illegible]

ट्टुन-मिट्ठुन और बच्चा झमूरा

लोगों के पास पता नहीं कैसी-कैसी दौलत होती है। हमारे बच्चा झमूरे के पास तो एक ही दौलत है कि गर्ल्ज होस्टल की लड़कियां उसकी फ्रेंडज़ हैं। वे हर अच्छे बुरे समय में उसे नहीं भूलतीं। उसे विश्वास है कि इस फ्रेंडशिप के सहारे कोई सीढ़ी लगाकर वह एक दिन इतना ऊपर पहुंच जाएगा कि लोग उसकी उन्नति देखकर मूर्छित हो जाएंगे। अब जरा ध्यान से देखिये क्या होने वाला है ?

बच्चा झमरे की इस हालत पर आपकी आँखों में दो चार आसू आ जायें तो उन्हें लिफाफे में बन्द करके हमारे पास भेज दीजिये

के. के. अरोड़ा दिल्ली-३१

प्र० मदस्सर नजर (पाक-इंग्लैंड) ने अपना धीमा शतक ५५७ मिनट में पूरा किया न कि ५५५ मिनट में।

उ० हमारे रिकार्डों के अनुसार यह शतक ५५५ मिनट में ही बना था। उन्होंने नौ घंटे व १५ मिनट लिये। कुल ५७८ मिनट तक बल्ले बाजी करके ११४ रन बनाये। शतक ५५५ वें मिनट में बना। इससे पहले का धीमा रिकार्ड द. अफ्रीका के मैकग्लीयू का ५४५ मिनटों का था।

प्र० १०० से ज्यादा कैच लेने वाले खिलाड़ी।

खिलाड़ी	कुल टैस्ट	कैच
एम. सी. काउड्रे	११४	१२०
डब्ल्यू. हैमण्ड	११०	११०
जी. एम. सोबर्स	९३	११०
आई. एम. चैपल,	७२	१०३
सिम्पसन	५४	१००

जबकि "खेल खेल में" नामक सतम्भ में १०० से ज्यादा कैच लेने वालों की सूचि गलत थी ! (सिम्पसन को छोड़कर)।

उ० हमारी सूची गलत नहीं थी। कॉलिन काऊड्र तथा एमसी काऊड्र एक ही व्यक्ति का नाम है। जिस प्रकार जी. एम. मोदी और गूजरमल मोदी एक ही व्यक्ति के नाम हैं सूची के और खिलाड़ियों के नाम भी उसी प्रकार सही हैं। डब्ल्यू हैमन्ड कह लो या वॉली हैमन्ड, जी. एम सोबर्स कहो या गैरी सोबर्स और आई. एम. चैपल कह लो या ईयान चैपल।

(पाठकों से प्रार्थना है कि हमें ऐसे पत्र लिखते समय खुद पहले अपनी जानकारी की जांच कर लें। हमारे उत्तर रिकार्डों के अध्ययन के बाद ही दिये गये होते हैं। कई पाठक कहीं और जगह कुछ पढ़ लिया और फौरन हमें गलत साबित करने के लिये पत्र लिखने बैठ जाते हैं यदि किसी को ऐसा पत्र लिखना भी हो तो हमें यह भी लिखें कि आपकी सूचना कहां से ली गयी है। कभी-कभी प्रूफ रीडिंग या छापे की गलती से पत्रिकाओं में गलती जरूर हो जाती है परन्तु प्रायः उसे दूसरे अंक में सुधारा जाता है छापे की गलतियां तो प्रायः सभी पत्रिकाओं में हो जाती हैं। हमारे अंक १६ में भी एक ऐसी गलती है। विश्वनाथ के प्रथम टैस्ट पर पूछे प्रश्न के उत्तर में प्रथम पारी में शतक बनाने की बात कही गई है परन्तु यह गलत है ! छपाई में एक लाईन छूट गयी। सही उत्तर है, विश्वनाथ ने कानपुर के अपने प्रथम टैस्ट में प्रथम पारी में शून्य व द्वितीय पारी में शतक बनाया था)

रत्नेश कुमार जाचक—(म. प्र.)

प्र० ग्लेनटर्नर और गावस्कर में कौन श्रेष्ठ है ?

उ० दोनों श्रेष्ठ हैं अलग-अलग परिस्थितियों में खेलने के कारण दोनों की तुलना करना ठीक नहीं होगा।

रोशन व्यास 'त्यागी'—इन्दौर

प्र० इन्हें तेज खेलने के क्रम से दें।

ग्लेनटर्नर, फ्रेडरिक्स, मॉजीद खाँ, सुनील गावस्कर व बॉयकाट।

उ० फ्रेडरिक्स, माजिद खाँ टर्नर, गावस्कर व बॉयकॉट।

जगतजीत सिंह—लुधियाना-२

प्र० भूतपूर्व आस्टरेलियन कप्तान (IAN CHAPPEL) ने जब अपनी CAPTENSHIP से इस्तीफा दिया था तो क्या वह बाद में GREG CHAPPRL की TEAM में खेला था।

उ० चैपल ने कप्तानी से नहीं टैस्टों से इस्तीफा दिया था। उससे पहले वे अपने छोटे भाई ग्रेग चैपल की कप्तानी में कई टैस्ट खेले थे। उनके इस्तीफे के बारे में यह कहा जाता है कि आस्ट्रेलिया का क्रिकेट बोर्ड प्रसिद्ध खिलाड़ियों की छुट्टी करने में मजा लेता है पहले भी कई नामी खिलाड़ियों को अचानक टैस्टों से ड्रॉप करके उन्होने खिलाड़ी के आत्म सम्मान को चोट पहुंचाई। चैपल बोर्ड अधिकारियों को इससे वंचित करना चाहता था। सारांश यह कि इससे पहले कि अधिकारी चैपल को लात मारते चैपल ने खुद उन्हें लात मार दी और बोर्ड वालों को लात का प्रयोग करने का मौका ही नहीं दिया।

संजय सेठी आलमबाग—लखनऊ

प्र० : लाला अमरनाथ का टेस्ट रिकार्ड बताइये ?

उ० : लाला अमरनाथ ने कुल २४ टेस्ट मैच खेले ८७८ रन बनाये। एक भाग शतक ११८ रनों का रहा, ४ अर्द्धशतक बनाये १३ कैच लिये, तीन टेस्ट सीरीजों में कप्तानी की।

सुरेश खुराना 'पप्पी'—जींद

प्र० : भारत में पहली विकेट की साझेदारी किसने की है और किसने बनाई है ?

उ० : भारत का प्रथम विकेट की साझेदारी का रिकार्ड ४१३ रनों का है जो मीनू मांकड़ और पंकज राय ने १९५५-५६ टैस्ट में मद्रास में बनाया।

सीराज मेमन—बैतूलगंज

प्र० : आस्ट्रेलिया के कई खिलाड़ी जैसे ग्रेग चेपल, लिली आदि कहां हैं ?

उ० : वे पैकर सर्कस में खेलते हैं।

अवताश चन्द्र आनन्द—फिरोजपुर

प्र० : सोबर्स ने टैस्ट जीवन में कुल कितने शतक लगाये।

उ० : सोबर्स ते २६ शतक लगाये।

दलीप साहनी—इन्दौर

प्र० : यदि भारत में तेज पिच बनाई जाए तो क्या तेज गेंदबाज बन सकते हैं ?

उ० : जरूर—और प्रथम श्रेणी के मैचों में यह नियम बना दिया जाना चाहिये। प्रथम दस या १५ ओवरों तक स्पिनरों को लाना निषिद्ध होगा।

महेश बग्गा—इन्दौर

प्र० : विश्व क्रिकेट में सबसे तेज गेंद बाज कौन है, तथा उसकी गति क्या है ?

उ० : इस बारे में कुछ निश्चित रूप से कहना कठिन है टामसन, लिली, राबटेस और होल्डिंग को तो हम जानते ही हैं इनके अतिरिक्त आस्ट्रेलिया तथा वेस्ट इंडीज में हर सीजन में नये फॉस्ट बालर उभरते ही रहते हैं।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वालीबाल कैसे खेलें

लैफ्ट फारवर्ड

लैफ्ट फारवर्ड आगे की पंक्ति में बायीं तरफ खड़ा हो कर खेलता है।

राइट फारवर्ड की तरह उसे भी वाली मारने, गेंद ऊँची उठाने, चकमा देकर गेंद को सीधे ही विपक्षी मैदान के खाली स्थान में जहां कोई विपक्षी खिलाड़ी न हो या उस खाली स्थान तक उसकी पहुंच न हो सके ऐसे स्थान पर गेंद फेंकने की क्षमता उसमें होनी चाहिए।

खेल की शुरुआत

खेल की शुरुआत करने से पहले दोनों दलों के कप्तान मैदान में आते हैं और सिक्का उछाल कर प्रांगण अथवा सर्विस पहले कौन करेगा—इसका निर्णय करते हैं। विजयी कप्तान को मैदान का कोई भी इच्छित क्षेत्र या पहले सर्विस करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है।

प्रत्येक पारी के बाद दोनों दल खेल का प्रांगण बदल लेते हैं।

पहला खिलाड़ी जो सर्विस के लिए तैनात हो—गेंद को विपक्षी दल के प्रांगण में सर्विस द्वारा फेंकता है और विपक्षी के किसी भी खिलाड़ी के पास जब गेंद पहुंचती है तो वह गेंद को ऊंची उठाकर अपने जाल के पास वाले साथी खिलाड़ी तक वाली मारने के लिए पहुंचाता है। जाल वाला खिलाड़ी गेंद को वाली मारकर या धीरे से खिसका कर फिर से अपने विरोधी दल के प्रांगण में पहुंचा देता है।

और इस प्रकार गेंद का आदान-प्रदान शुरू हो जाता है और खेल आरम्भ हो जाता है।

यह जरूरी नहीं है कि जिस खिलाड़ी को गेंद मिले—वह उसे ऊंची उठाकर अपने जाल के पास खेल रहे साथी खिलाड़ियों को दे वह चाहे तो सीधी गेंद विपक्षी के प्रांगण में फेंक सकता है।

खेल आरम्भ होने के बाद यदि गेंद जाल से टकराकर वापस आ जाये तो गेंद को खिलाड़ी खेल सकता है, लेकिन सर्विस करते समय गेंद जाल से नहीं टकरानी चाहिए। ऐसे वक्त सर्विस का मौका विपक्षी

दल को मिल जाता है।

एक दल के प्रांगण में गेंद का स्पर्श तीन बार तक हो सकता है यानी उस दल के खिलाड़ी गेंद को वाली के लिए या विपक्षी दल के प्रांगण में गेंद पहुंचने के लिए तीन बार गेंद का स्पर्श कर सकते हैं। लेकिन एक खिलाड़ी एक ही बार स्पर्श कर सकता है।

उदाहरण के लिए मान लीजिए विपक्षी दल के किसी खिलाड़ी ने या सर्विस करने वाले ने गेंद को अपने विपक्षी के प्रांगण में फेंका। मान लीजिये गेंद सेन्टर फारवर्ड खिलाड़ी को प्राप्त हुई तो उसने गेंद को ऊंचा उठाकर अपने जाल के पास वाले साथी खिलाड़ी राइट फारवर्ड को दी। राइट फारवर्ड ने गेंद ऊर्ध्वाधर स्थिति में और ऊँची उठाकर अपने तीसरे साथी लेफ्ट फारवर्ड को वाली मारने लायक बनाकर दी और लेफ्ट फारवर्ड ने ऊंची गेंद पर वाली मार कर विरोधी दल के प्रांगण में पहुंचा दिया।

इस प्रकार गेंद को तीन बार तीन विभिन्न खिलाड़ियों द्वारा स्पर्श किया गया। पहला स्पर्श सेन्टर फारवर्ड का—दूसरा स्पर्श राइट फारवर्ड का तथा—तीसरा स्पर्श लैफ्ट फारवर्ड का।

यदि तीसरी बार किसी कारणवश गेंद ठीक स्थिति में नहीं बन पायी तो अंक खोना पड़ता है और सर्विस का मौका विपक्ष को मिलता है।

चौथी बार का स्पर्श फाउल 'गलती' में गिना जाता है और अंक खोना पड़ता है।

यदि खिलाड़ी चाहें तो एक या दो स्पर्श में गेंद को विपक्षी दल के प्रांगण में पहुंचा सकते हैं।

जिस दल को सर्विस करने का चांस मिलता है, वही दल अंक अर्जित करता है। विपक्षी दल केवल उसके अंक न बनने देने के लिए गेंद को उसके प्रांगण में ऐसी जगह गिरने का प्रयत्न करता है, जहाँ से वह वापस न लौटाई जा सके। जब गेंद लौटाने में वह दल असमर्थ हो जाता है तो सर्विस करने का मौका दूसरे दल को मिलता है। ऐसे समय अंक अर्जित करने का मौका उसे मिलता है और वह विपक्षी दल के प्रांगण में गेंद गिराकर अंक पाने की कोशिश करता है, लेकिन विपक्षी दल के खिलाड़ी गेंद अपने क्षेत्र में न गिरने देने का प्रयास करते हैं और गेंद विपक्षी दल के प्रांगण में गिरने का प्रयास करते हैं ताकि विपक्ष अंक अर्जित न कर पाये और सर्विस करने का अधिकार खो दे।

सर्विस का पुनः अधिकार प्राप्त होने पर दल का प्रत्येक सदस्य दक्षिणावर्त (क्लॉक वाइज) रूप में अपने स्थान से स्थिति बदल लेता है। यानी कोई दल जब भी दुबारा सर्विस प्राप्त करने का अधिकार पायेगा, तभी क्लॉज वाइज रूप में अपने खिलाड़ियों की स्थिति बदलेगा। यही क्रम विपक्षी दल के खिलाड़ियों में होगा।

इसी तरह जब भी सर्विस का अधिकार इस दल को मिलेगा यह दल तीर द्वारा दर्शाये संकेत के अनुसार अपना-अपना स्थान बदलते रहेंगे और हर खिलाड़ी को सर्विस का हक प्राप्त होगा।

पूरे खेल में यही क्रम चलता रहता है।

ध्यान रहे गेंद जब भी जिस दल के प्रांगण में गिरकर जमीन या तल को छू लेगी, उसे आऊट माना जायेगा और जिस दल के प्रांगण में गेंद गिरेगी—वह दल अंक खो देगा।

जाल के ऊपर भी यदि आती हुई गेंद जाल की निश्चित लंबाई से परे उठती हुई जाती है तो गेंद को आउट माना जाता है। और जो दल ऐसी गेंद फेंकता है...वह अंक खो देता है।

क्रमशः
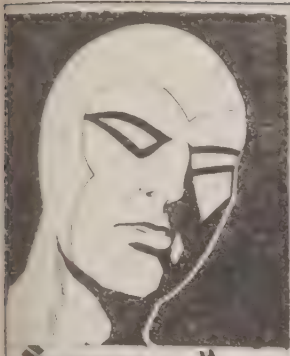
फैण्टम और डायना की नौकरी
जहाज नं० ३४६ यात्रियों के लिये तारकीमो वापिस आ रहा है ।
बन्द है या खुला है पहले अच्छी तरह देखभाल लो ।
वो पागल जानबूझ कर नीचे कूदा था ।
रिपोर्टर मेक-ग्रेगर तुम्हें जनरल तारा के पास पेश होना है ।
ओह ! कोई मुसीबत लगती है ।
यह सब क्या है ?
मेक ! मै नहीं जानना
तुम सबको घुटने टेक कर जनरल के सामने पेश होना है !
इसकी कोई जरूरत नहीं है ।
मै यह आवाज पहचानती हूं ।

प्रिय !
धीरज रखो डियाना, जनरल अपने किये पर तुमसे मांफी मागेगा ।
तुमने इन लोगों को जमीन पर कीड़े की तरह चलने के लिये बाध्य किया और फिर शिकंजे में जकड़ा ।
तुम अपने हाथ और घुटने जमीन पर टेक कर माफी मांगो।
मर जाऊंगा पर ऐसा नहीं करूंगा ।
ठीक है माफी नहीं मांगनी तो मरने के लिए तैयार हो जाओ ।
?!

मुझे मत मारो ! मै दोनों से माफी मांगता हूं ।
बस अब ठीक है जनरल !
!
लेकिन···तुम चाहे कोई भी हो···मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा···मैं तुम्हें दुनिया के हर कोने से ढूंढ़ निकालूंगा और आहिस्ता आहिस्ता मारूंगा···
तुम क्या ढूंढ़ोगे जनरल मैं तुम्हें खुद ढूंढ़ निकालूंगा ये तो बाद की बात है···अब यहां से चलना बेहतर है···
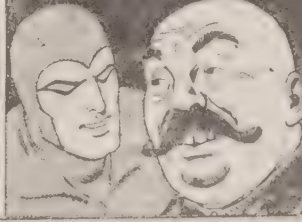
अरे ! यह तो वही आदमी है जो इस जहाज से नीचे कूदा था इसके साथ जनरल तारा भी है ।
जनरल अगर तुम्हारे किसी भी जहाज ने हमारा पीछा किया तो हम तुम्हें बाहर फेंक देंगे !
मेजर जैसा यह कहता है वैसा ही करो
ताराकीमो की शक्ति-शाली सेना लाचार खड़ी है ।
मि० वाकर हमें इससे प्रति विरोध प्रकट करना चाहिये ।
क्यों नहीं, जरूर विरोध प्रकट करना लेकिन अभी नहीं ।

इस समय हम सीमा के बिल्कुल करीब आ गये हैं अब क्या करें मिस्टर वाकर ।

जनरल अब तुम जाओ... दस बार गिनने के बाद इस डोरी को खींच देना।

चलते फिरते भूत का दूसरा नाम।

नहीं, नहीं ! मैंने पहले ऐसा कभी नहीं किया...

विदा जनरल तारा अब तुम चाहो तो टैक्सी या कुछ और बुला सकते हो।

वह बहुत क्रूर शासक था।

सच है... लेकिन सिर्फ यही एक रास्ता था कि मैं तुम सबको उस खून के प्यासे राक्षस से बचाने का...

डेली बगल

यू० एन० ताराकीमो मिशन की रिहाई

जनरल तारा को गिरफ्तार करने के बाद छोड़ दिया गया एक अजीबो गरीब घटना।

जनरल तारा।

डियाना... हम दूसरे कामों में काफी व्यस्त थे अब एक मीठी सी...

मैं भी यही कहने जा रही थी प्रिये !

तुमने बहुत जल्दी आकर हमें बचा लिया।

जब एक आदमी शादी करने वाला हो तो वह सब काम जल्दी-जल्दी करता है।

शादी कर रहे हो ? कब ?

बस शीघ्र-अतिशीघ्र !

अगले सप्ताह फैन्टम की शादी !

गुमनाम है कोई ?

प्रतियोगिता 34

इनाम ३० रु०

आपको यह बताना है कि सफेद चेहरे वाली यह कौनसी तारिका है और बीच वाला आदमी क्या दीवानी बात समझा रहा है ?

यदि एक से ज्यादा सही हल हुये तो इनाम की राशि विजेताओं में बराबर-बराबर बांट दी जायेगी, अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही इस पते पर भेजें :- गुमनाम है कोई प्रतियोगिता, ८ बी. बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-२ / हमारे कार्यालय में पहुंचने की अंतिम तिथि :— ५ अगस्त १९७८ - एक पोस्टकार्ड पर केवल एक ही हल भेजें।
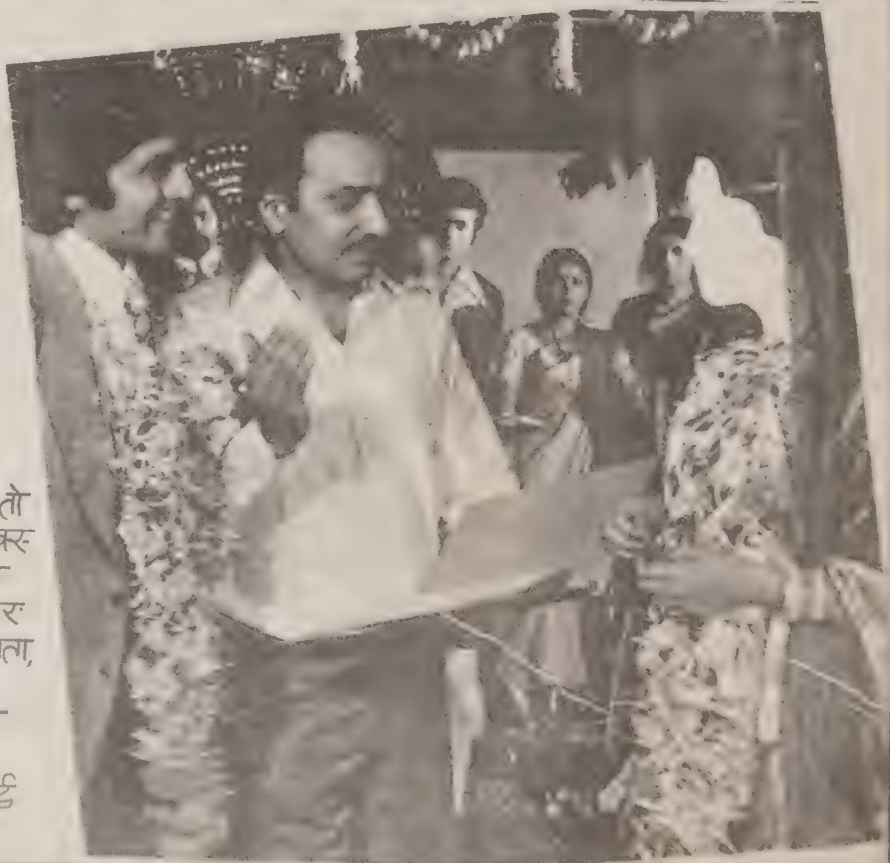
प्र० : दिन चौबीस घण्टे का ही क्यों होता है ?

उ० : दिन चौबीस घंटे का होने का मुख्य कारण मनुष्य की समय को इस प्रकार ही प्रयोग में लाने की इच्छा है। प्रकृति में घंटे, मिनट तथा सैकिण्ड का ज्ञान कराने का कोई भी संकेत नहीं पाया जाता। समय का ये विभाजन मनुष्य ने स्वयं अपने सुभीते के लिए ही किया है। परन्तु जिसे 'दिन' कहते हैं। उसके लिए प्रकृति में परिवर्तन अवश्य होता है। पृथ्वी के अपनी धुरी पर हर बार पूरब से पश्चिम तक घूमने में एक नियत समय लगता है और इसे ही हम दिन कहते हैं।

वैज्ञानिक तारों की सहायता से इस समय को पूरी तरह नाप लेते हैं। वेधशालाओं में साइडरील घड़ियां होती हैं। साइडरील दिन का आरम्भ एक विशेष तारे के एक याम्योत्तर रेखा के पास के गुजरने पर होता है तथा जब वही तारा उसी याम्योत्तर रेखा के पास से दूसरी बार गुजरता है तो दिवस समाप्त समझा जाता है। मनुष्य ने साइडरील दिन की लम्बाई का पता लगाने के लिये ही समय को घंटों मिनटों तथा सैकिन्डों में विभाजित कर लिया है। इसके अनुसार एक साइडरील दिन २३ घण्टे ५६ मिनट तथा ४.०६ सैकिन्ड लम्बा होता है। तथा इसी अनुसार एक वर्ष में ३६६ दिन होते हैं परन्तु हम अपना समय सौर परिवार से सम्बन्धित रखते हैं, और इसके अनुसार हमारा दिन थोड़ा बढ़ जाता है तथा वर्ष में $365\frac{1}{4}$ दिन होते हैं और हर चौथे वर्ष को लीपयीअर कर एक अतिरिक्त दिन को समंजित करते हैं।

आदिकाल के मानव दिन केवल सूर्योदय से सूर्यास्त तक ही समझते थे तथा रात्रि के घंटों को नहीं गिनते थे। यूनानी लोगों ने अपने दिन को सूर्योदय से सूर्यास्त तक रखा था परन्तु रोम निवासियों ने अपने दिन को आधीरात से अगली आधी रात तक रखा था। घड़ियों के निर्माण के पहले दिन और रात बारह-बारह घंटों में बंटे हुए थे परन्तु ये व्यवहारिक नहीं रह पाया क्योंकि मौसम के बदलने के साथ साथ इन दो विभाजित समयों में अन्तर पड़ जाता था।

आजकल कानून के अनुसार अधिकतर देशों में रोम निवासियों के समान आधी रात से आधी रात तक एक दिन माना जाता है।

प्र० : वाइरस (Virus) क्या है ?

उ० : वाइरस अत्यन्त छोटे अणु होते हैं जो मनुष्य, जानवर तथा पेड़ पौधों तक में बिमारी के कारण होते हैं। वाइरस को अणु कहना भी अजीब-सा है इसलिये देखते हैं कि ऐसा क्यों कहते हैं।

वाइरस इतने सूक्ष्म होते हैं कि वे बारीक से बारीक छलनी से भी निकल जाते हैं तथा ये चीनी के घोल तक में भी उत्पन्न नहीं किये जा सकते, परन्तु जीवित टिशू की मौजूदगी में ये उत्पन्न होकर आसानी से बढ़ते हैं। ये परिजीवि होते हैं तथा अपने परिपोषी पर पूरी तरह निर्भर होते हैं। वाइरस इतने सूक्ष्म होते हैं कि इन्हें साधारण खुर्दबीन से भी नहीं देखा जा सकता, इनकी तस्वीर इलैक्ट्रोनिक माइकरोस्कोप से ही उतारी जा सकती है। वाइरस इतने छोटे होते हैं तथा इनको उत्पन्न होने के लिए इतनी अधिक चीजों की आवश्यकता होने के कारण वैज्ञानिकों का ये भी मत है कि वाइरस जीवित अणु होते ही नहीं अपितु जीवित व मृत अणुओं के बीच के कोई अद्भुत ही अणु हैं।

वाइरस से होने वाली बहुत-सी बीमारियों से हम परिचित हैं। शरीर के भिन्न भिन्न अंगों पर आक्रमण कर ये भिन्न-भिन्न रोग उत्पन्न करते हैं। शरीर की त्वचा पर आक्रमण करने वाले वाइरस से खसरा, माता, जर्मन मीजल्स, छाले पड़ना तथा बुखार आम होते हैं।

दूसरे वाइरस की नसों के टिशू के रोग फैलाते हैं जैसे रेबीज, दिमाग का बुखार, छोटी उम्र का फालिज इत्यादि। तीसरे प्रकार के वाइरस शरीर के अंदरूनी अंगों को रोग ग्रस्त कर देते हैं। इनमें विशेष हैं यैलो फीवर, इन्फलुएन्जा, साधारण जुकाम, खांसी, जिगर पर सूजन इत्यादि विशेष रूप से जानने योग्य हैं।

प्र० : अक्षांश तथा देशान्तर रेखांश क्या है ?

उ० : कल्पना करो की हम किसी रेगिस्तान या महासागर को पार करते समय किसी विपत्ति में फंस गये हैं तथा सहायता के लिये किसी को अपनी स्थिति बताना चाहते हैं। परन्तु चिन्हों के अभाव में ये बहुत कठिन होता है, ऐसे में अक्षांश तथा देशान्तर रेखांश की सहायता से ये कार्य किया जा सकता है। इनके द्वारा पृथ्वी की सतह पर किसी भी स्थान को ढूंढ़ना आसान हो जाता है।

यदि निर्दिष्ट स्थान उत्तर दक्षिण से सम्बन्धित है तो अक्षांश द्वारा सहायता मिलती है। पृथ्वी के बीच की रेखा को भूमध्य रेखा कहते हैं इसके उत्तर में उत्तरी अक्षांश तथा दक्षिण की ओर दक्षिणी अक्षांश होता है। अक्षांश पृथ्वी के चारों ओर बराबर की दूरी पर खिची काल्पनिक रेखायें होती हैं। ये भूमध्य रेखा के उत्तर तथा दक्षिण में मानी जाती हैं। इन्हें पैरेलल भी कहते हैं क्योंकि ये एक दूसरे के तथा भूमध्य रेखा के पैरेलल होती हैं। इन रेखाओं की एक दूसरे से दूरी मीलों के बजाये डिग्री में नापी जाती है एक डिग्री एक गोलाई का $\frac{1}{360}$वां हिस्सा होती है। हर पन्द्रह डिग्री के बाद एक और अक्षांश रेखा होती है। उत्तर में उत्तरी ध्रुव पर ९०° उत्तर तथा दक्षिणी ध्रुव पर ९०° दक्षिण होता है। भूमध्य रेखा पर ०° अक्षांश होती है।

यदि फासला पूर्व तथा पश्चिम में नापना हो तो इसमें देशान्तर रेखांश से सहायता लेते हैं। परन्तु इनका आरम्भ कहां होता है, इसके लिए बहुत पहले एक समय ग्रीनविच लंदन से गुजरने वाली रेखा को ०° देशान्तर रेखांश माना गया था देशान्तर रेखाओं को याम्योत्तर कहते हैं तथा ग्रीनविच से गुजरने वाली रेखा प्रधान याम्योत्तर कहलाती है। इस रेखा के पूर्व के हर १५° के फासले पर पूर्व याम्योत्तर तथा पश्चिम में पश्चिमी याम्योत्तर होती है। इस नाप को और ज्यादा सही करने के लिये एक डिग्री को ६० मिनट में बांटा गया है तथा एक मिनट को ६० सैकिन्ड में।

रवीकान्त जैन—दिल्ली
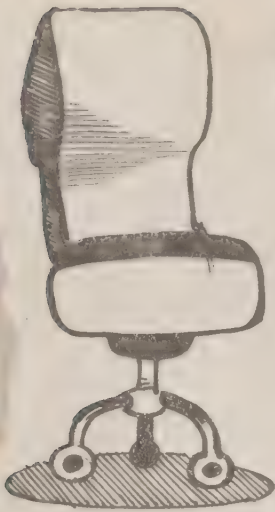
दीवाना कैरियर गाइड

आपने अखबारों में भी और बाजारों में भी कई प्रकार के कैरियर गाइड देखे होंगे जो आपको यह गाइड करते हैं कि क्या बनने के लिये आपको क्या करना है कौन सी परीक्षा देनी होती है अथवा कौन सी ट्रेनिंग लेनी पड़ती है ? हमारा दीवाना कैरियर गाइड इन सबसे अलग है, सबसे निराला है। हम आपको यह बतायेंगे कि बगैर कोई विशेष काम किये भी कितने अच्छे कैरियर आज उपलब्ध हैं। आपको मेहनत भी नहीं करनी होगी। मुफ्त के माल पर हाथ साफ करते जाइये और मोटे होते जाइये। अपनी नस-नस में हराम गिरी को पनपने दीजिये। हराम गिरी अब नारा है सारा भविष्य हमारा है।

बूटलैगिंग कन्ट्रेक्टर

यह व्यवसाय एक प्रकार के ड्रामे का व्यवसाय है। जरा सी भी एक्टिंग आपको आती हो तो काम बन जायेगा अपनी जेब में गाढ़ी लाल स्याही की शीशी डाल कर किसी मॉडर्न कॉलोनी में जाइये। जिस कोठी के बाहर टोकनधारी कुत्ता नजर आये वहां जाकर टांग पर लाल स्याही पोत कर शोर मचाइये कुत्ता ने काट खाया। मुकदमे के डर से कुत्ते का अमीर मालिक आकर १५००-दो हजार आपको देकर विदा करेगा एक कुत्ते की कटाई से महीने में आराम से चार अंकों की आमदनी की जा सकती है।

फ्यूचर गाइड कन्सल्टेन्ट

यह निजी क्षेत्र में आता है। इस पद के योग्य होने के लिये आपको झूठ बोलना आना चाहिये। लिफाफे को देख खत का मजमून भांपने की क्षमता होनी चाहिए। पत्रिकाओं में छपने वाली साप्ताहिक भविष्यों का रट्टा लगाने पर मदद मिलेगी। (फ्यूचर गाइड कन्सल्टेंट को साधारण बोलचाल की भाषा में ज्योतिषी कहा जाता है।)
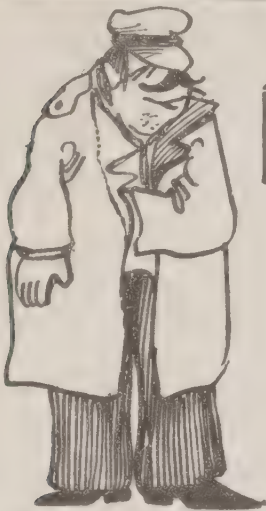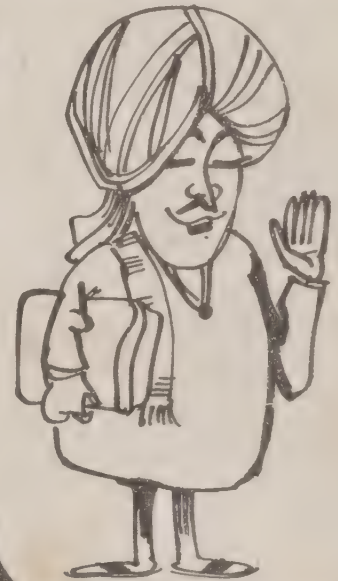
बी. टी. सर्विस आर्गेनाइजर

बी० टी० सर्विस का मतलब ब्लेक में फिल्म की टिकटें लेकर बेचना है। आय इसमें भी अच्छी है। थोड़े से धैर्य की जरूरत है। धैर्य एडवांस की खिड़की की लाइन में खड़े होकर टिकटें खरीदने में रखना पड़ता है। बेचना तो आसान है। इस धंधे में किसी विशेष ट्रेनिंग की जरूरत नहीं है।

ईयर होस्टेस

लड़कियों के लिये यह बहुत आकर्षक व्यवसाय है। इसमें काम सिर्फ ईयर यानि कानों का है। मुहल्ले के प्रत्येक घर जाकर गृहणियों की ऊट-पटांग बातें, चुगली और अफवाहें शांतिपूर्वक हाँ. हूं.. ठीक है का पुट मिलाते हुये सुननी हैं। फिर आपकी चाय पकौड़ी से सेवा भी की जायेगी। बाद में जाते हुये उधार पैसे या राशन मांगें। आपको मिल जायेगा। लौटाने की चिन्ता न करें औरतें उस व्यक्ति पर जो ध्यान से उनकी बकवास सुनता रहे सब कुछ न्योछावर कर सकती हैं। आठ-दस ऐसी बातूनी महिलायें ग्राहक बन जायें तो आपकी आमदनी प्राइवेट सेक्रेटरी के बराबर होगी।

शादी डाँसर

इस व्यवसाय को अपनाने के लिये आपको ट्विस्ट और शेक आना जरूरी है। कहीं से प्रशिक्षण ले लीजिये. अब जहां कहीं भी बारात जाती देखें उसमें घुसपैठ कीजिये और डांस करना शुरू करें। आपका डांस देख बारात में रंग आना चाहिये। फिर कोई आपको यह नहीं पूछेगा कि तू कौन है ? कहां से आया है ? वधू के घर मजे से माल पूरी उड़ाइये। वर के साले से एप्रोच लड़ाने पर बोतल का जुगाड़ भी हो सकता है। आपका डांस देख उस पर भी रौब पड़ा होगा। वह आपको जीजा जी का खास यार समझ रहा होगा। आपको हाथ की सफाई भी आती हो तो जेब खर्च भी निकल जायेगा। शादियों के सीजन में आपको ओवर टाइम करना पड़ेगा।

टकीला!

दादागीरी

दादागीरी का काम भी बड़े पैसे वाला है। इसका तरीका आसान है. गली में किसी से बेबात पर उलझ कर मार-पिटाई कीजिए और जेल पहुंचिये। वहां बड़े-बड़े गुण्डों से मुलाकात होगी. जान पहचान हो जायेगी। उन्हें उस्ताद बनाइये. जेल से आने पर लोगों से झगड़े मोल लीजिये. बात बात पर चाकू निकालिये। कुछ ही दिनों में गुण्डे के नाम में मशहूर हो जाओगे। अपने चेले-चांटों से बगैर गाली बात मत करें। एक बार लोगों द्वारा गुण्डा मान लिए जाने पर समझिये आपको दादा की ऑनरेरी नौकरी मिल गयी है। गली के व्यापारी और अवैध धंधा करने वाले सब आपको नजराना देने लगेंगे। आजकल तो पॉलिटिकल पार्टियां भी दादाओं की सेवायें प्राप्त करती हैं, कैरियर जम जायेगा।

स्लोगन शाऊटर

इस व्यवसाय में कदम रखने के लिये आपका गला तेज होना जरूरी है बस। फिर आप बड़ी-बड़ी राजनीतिक पार्टियों के मुख्य नारे और जिन्दाबाद-मुर्दाबाद के नारे लगाने के लिये प्रेक्टिस करें। रोज गरारे करके गला साफ रखिये। अपना कार्ड सभी पार्टियों के दफ्तरों में छोड़ दीजिये। आपकी चांदी हो जायेगी. रोज ही कोई न कोई पार्टी कहीं न कहीं नारे लगाने के लिये आपको भाड़े पर ले जायेगी। मजदूरी तो देगी ही साथ ही जलपान तथा मुफ्त सवारी भी उपलब्ध करायेगी।

प्रोफेशनल विटनेस

अदालतों में तीन चार वकील अपनी तरफ गांठ कर प्रोफेशनल विटनेस बनिये। जहां उनके मुवक्किलों को गवाह की जरूरत पड़ी उचित फीस पर नकली गवाही दे दी। इस पेशे में भी गुजारे लायक आमदनी है।
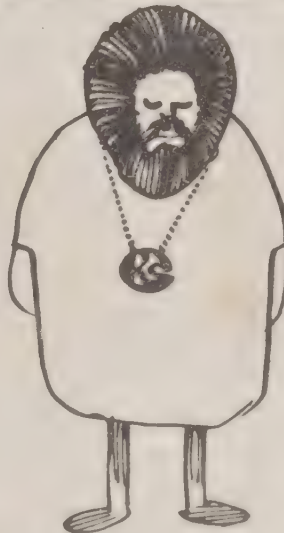
एम. बी. बी. एस. कोर्स

इस कोर्स में आपको पहले हाथ की सफाई वाले मेजिक ट्रिक सीखने होंगे जैसे हवा से राख या जंजीर निकालना। फिर बाल व दाढ़ी बढ़ा कर कुछ चेले चांटे भाड़े पर इकट्ठा कर खुद को भगवान घोषित कराइये। धीरे-धीरे आपके भक्त लाखों की संख्या में बनेंगे और आपकी आमदनी लाखों रुपये मासिक होगी। एम. बी. बी. एस. का अर्थ है मेजीशियन बना बाबा साईंयां।

किशन लाल शर्मा

अखबार आते ही रोज की तरह दिन भर का भविष्य जानने के लिएपेज पलटा। राशिफल वाले कालम में अपनी राशि पर नजरें पड़ते ही आँखें फटी सी रह गईं। कहीं गलती से दूसरी राशि तो नहीं देख गये, यह भ्रम होते ही एक बार फिर से मिथुन राशि पर हमने नजरें जमा दी। हमारा भ्रम निर्मूल था। हमने अपनी राशि को ही देखा था।

हमारे दिमाग में बार बार हमारी राशि में लिखे शब्द 'सवारी से खतरा' घूम रहे थे। हम स्वयं ड्यूटी पर रोज रिक्शे में जाते थे। बनिये की दुकान तो थी नहीं जब जी में आया खोली, जी में नहीं आया तो छुट्टी कर दी। अपना राशिफल देखते ही हमारा मन उदास हो उठा था। बेमन से हम नित्य कर्म से निपट कर नहा धोकर तैयार हो गये। हमें तैयार देख पत्नी खाना परोस थाली ले आई थी। हमारा मन खाना खाने को बिल्कुल न था। दो चार ग्रास उलटे सीधे मुँह में डालकर उठ खड़े हुये। इतनी जल्दी, कम खाकर हमें उठता हुआ देख पत्नी ने टोका, "बस, आज तो कुछ खाया ही नहीं।"

हम कुछ नहीं बोले थे। पत्नी की बातें सुनकर भी मन उदास रहा। हमारे चेहरे को देख पत्नी ताड़ गई थी कि हम आज उदास हैं। हमारी उदासी का कारण जानने को पत्नी ने बार-बार हमारे दिल को कुरेदा! पत्नी के लाख प्रयत्नों के बाद भी हम मौन धारण किये रहे थे।

बुझे दिल से पत्नी से विदा लेते समय मेरी कालेरी के उपन्यास 'बेंडेटा' का वह दृश्य आंखों के सामने घूम गया जिसमें नायक अपनी पत्नी (नायिका से विदा लेता है।) नायक तैयार होकर अपनी पत्नी के कमरे में उससे विदा लेने पहुंचता है। उसकी पत्नी अभी तक जागी नहीं है। उसके पास ही उसकी बच्ची सो रही है। नायक ने पत्नी को जगाना उचित नहीं समझा। उसके मुख को देख कमरे से विदा होते हुये उसके दिल में रह-रह कर ख्याल आ रहे थे कि मैं अपनी पत्नी से शायद फिर न मिल पाऊं।' हमें भी रह-रह कर ख्याल आ रहा था, "शायद पत्नी से हमारी यह अंतिम मुलाकात है।"

पत्नी से विदा लेकर हम दरवाजे से निकले ही थे कि बिल्ली हमारा रास्ता काट गई। घर से निकलते ही अपशकुन हो गया था। कुछ देर तक खड़े हम पहले और किसी के गुजरने का इन्तजार करते रहे। लेकिन दस मिनट के इंतजार के बाद भी कोई नहीं गुजरा था। ज्यादा इंतजार करने में आफिस को देर हो जाती। आज बीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिक युग में भी हम रूढ़िवादिता और अंधविश्वास में फंसे हुए थे। अपने दिल को मजबूत करके हम चल दिये।

गली के नुक्कड़ पर पहुंचते ही एक आदमी हमसे आ टकराया। उसके हाथ में एक कागज था जिसमें लिखे पते पर वह पहुंचना चाहता था। हमने कागज हांथ में पकड़कर उसको पता समझाने को जो नजरें उठाई, उसके चेहरे पर नजर पड़ते ही हम कागज फेंक कर ऐसे भागे मानो दिन में ही भूत देख लिया हो। जो आदमी हमसे पता पूछना चाहता था, वह काना था। घर से निकलते ही दूसरा अपशकुन हो गया था। अब हमें हमारी राशि सही होती नजर आने लगी थी। घर से निकलते ही दो-दो अपशकुनों ने राशि के सत्य होने का एहसास दिल में जगा दिया था।

हम सोचते-सोचते शाहगंज के चौराहे पर आ पहुंचे थे। चौराहे पर आकर लाइन लगाये खड़े रिक्शों वालों पर हमने नजर डाली। हम आज ऐसे रिक्शे में बैठना चाहते थे जिसको चलाने वाला बीच की उम्र का हो, यानि न जवान होन बुड्ढा। हमें मालूम था जवान रिक्शा चालक बहुत तेज रिक्शा चलाते थे। वह जल्दी से जल्दी नियत स्थान पर पहुंचने के प्रयास में कभी-कभी टकरा जाते थे। ज्यादा उम्र का रिक्शे वाला बड़ी मुश्किल में हांफते हुए मंजिल तक पहुंचा पाता था। वह रिक्शा तो धीरे चलाते थे। लेकिन कभी दुर्घटना हो जाये तो वह रिक्शा नहीं सम्हाल सकते थे। ज्यादा उम्र होने के कारण उनके हाथ ब्रेक को काबू में नहीं रख पाते जिसके कारण छोटी सी दुर्घटना भी भयंकर हो जाती थी।

चौराहे पर खड़े रिक्शों में से हमने अधेड़ उम्र के एक रिक्शे को ढूंढ़ लिया थ हमने ऐसे आदमी को ढूढ़ा था जो हमा हिदायतें भी मानता जाये। हमने रिक्शे बैठने से पहले ही धीरे चलने की हिदा रिक्शे वाले को दे दी थी। हमारे बैठने रिक्शे वाला चल पड़ा था। जब भी रिक वाला तेज चलने का प्रयास करता हम उ डांट देते। हमारी फटकार सुन वह धी पड़ जाता।

आधे रास्ते हम सकुशल आ पहुंचे थे सुभाष पार्क के पास आकर रिक्शा दायें हा पर मुड़कर एम० जी० रोड पर आ गय था। यहाँ से हमारी असली यात्रा शुरू होन थी। इस सड़क पर ट्रक, मोटर, स्कूट आदि सवारियों का आवागमन रहता है जब भी कोई ट्रक या अन्य तेज गति से गु रता वाहन रिक्शे के पास से निकलता ह मन ही मन बजरंग वली का नाम लेने लग थे। नाई की मंडी पर आकर रिक्शा आगर कोर्ट जाने वाली सड़क पर आ गया था रिक्शा धीरे धीरे बढ़ा जा रहा था। ह सुरक्षित घटिया मामू भांजा तक आ पहु थे। मन ही मन हम भगवान के नाम याद (कर) रहे थे।

घटिया से जामा मस्जिद तक ढल पड़ती है। हमने ढलान पर रिक्शे वाले क सावधानी से चलने की हिदायत दे दी थी ज्यों-ज्यों मंजिल करीब आती जा रही उदासी के बादल छटते जा रहे थे। रा झूठी पड़ने पर मन ही मन हम खुश नज आ रहे थे। न जाने हम अपने में ही खो क्या-क्या सोचे जा रहे थे। जोर से ब्रे लगने की आवाज ने हमें चौंका दिया। ह बड़ा कर हमने सामने देखा। सामने से आत बस से बचाने के प्रयास में रिक्शा बिजल के खम्भे से जा टकराया था। हम तेजी उतरते या रिक्शे में से छलांग लगाकर कूद इससे पहले ही रिक्शा पलट गया। ह बीच सड़क पर आ पड़े और हमारे ऊप रिक्शा! हम जोर-जोर से 'बचाओ-बचाओ' की आवाजें लगाने लगे।

सुबह सुबह ही क्या ऊधम मचा रख है। उठते देर हुई नहीं की ऊधम चालू।'

पत्नी की कर्कश आवाज ने हमा- आंखें खोल दी थीं। हमने जो आंखें खो कर देखा चौंक पड़े। हम बीच कमरे में फ पर पड़े थे और हमारे ऊपर खाट!

हम भी नदी के ऊदबिलाव ही रहे। दुनिया देखी ही नहीं। सुना है समुद्र बहुत विशाल होता है। वहां बड़ी-बड़ी आश्चर्यजनक चीज़ें होती हैं।
चलो एक चक्कर लगा आयें।
और क्या ? ज्यादा से ज्यादा यहां से तीन-चार सौ मील दूर ही तो होगा। दो-तीन दिन में नदी के बहाव के साथ तैरते बहते पहुंच जायेंगे।
यह क्या है देखो ? यह तो मक्की है। मक्की का भुट्टा।
है तो भुट्टा ही लेकिन समुद्र में यह कैसे आया? यहां तो आदमी भी नहीं हैं जो खेती करें इसकी।
कुछ आया समझ में ? समुद्र में मक्की। आया तो आया कहां से वहां ? बगैर खेती के मक्की पैदा नहीं हो सकती ?
रास्ते भर मैं भी इसी समस्या पर सोचता रहा। कुछ हल नजर नहीं आ रहा है। रात को भी नींद नहीं आयेगी।
पंचतंत्र
क्यों ? कैसे ? कैसे ?
क्यों ? क्यों ? क्यों ?
कल बड़ा मजा आया। नदी के दो ऊदबिलाव समुद्र देखने आये और मुझे देख कहने लगे यह मक्की का भुट्टा यहां कहां से आया'। उन्होंने मेरा केवल पिछला भाग ही देखा। मुँह देखा ही नहीं। उन बेचारों को यही पता नहीं था कि वाइपर फिश ऐसी ही होती है।
और शायद मक्की के भुट्टे की समस्या में वह अपना माथा फोड़ते होंगे।
शिक्षा-किसी समस्या को हल करते समय उसका पूरा रूप ध्यान में रखना चाहिये। आंशिक रूप से या टुकड़ों में समस्या पर विचार करने पर समस्या का गलत रूप नज़र आयेगा।
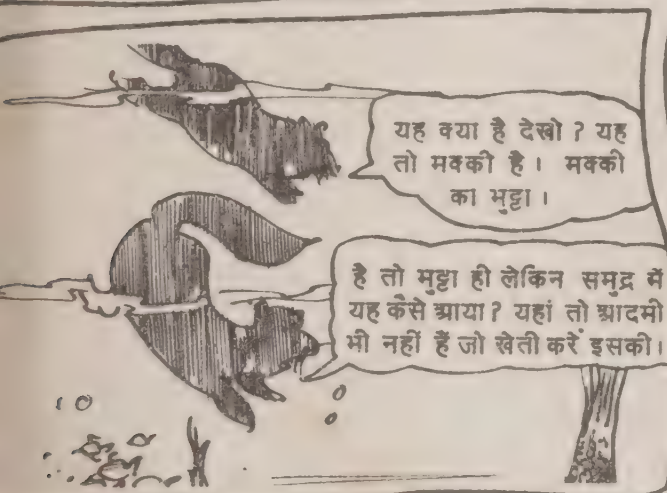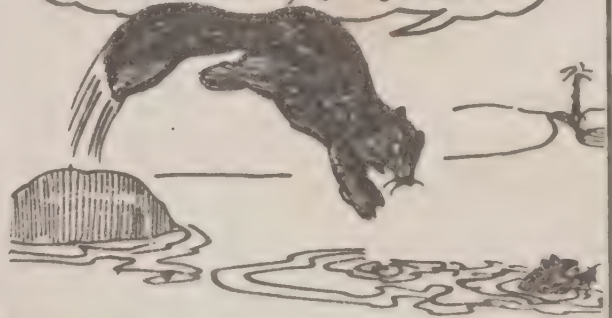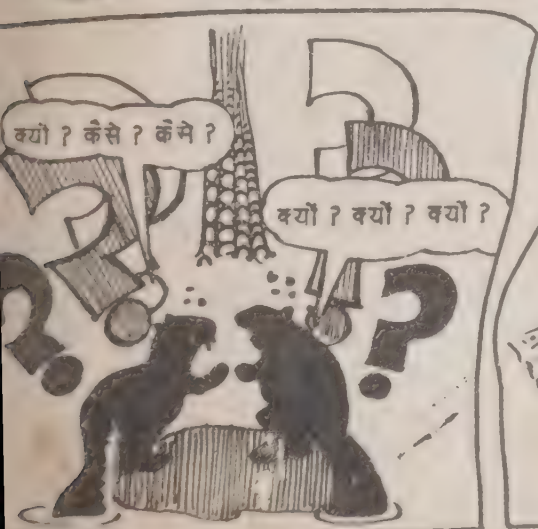
मैं मकान

फिक्र तौंसवी

और आखिर श्रीमती जी के आग्रह पर मैंने वह डेढ़ कमरा किराये पर उठा दिया। इससे यद्यपि खानदान की रवायत टूट गई लेकिन श्रीमती जी ने नयी रवायत कायम कर दी। शादी के बाद खानदान की हैसियत पत्नी के मुकाबले पर सैकंडरी हो जाती है।

यह डेढ़ कमरा मेरी मुनासिब जरूरियात से ज्यादा था। ज्यादा से ज्यादा उसका उतना ही प्रयोग था कि मेरा बड़ा लड़का कभी-कभी उसमें घुस जाता और अपनी महबूबा के लव-लेटर पढ़ा करता।

मेरे किरायेदार का नाम गजानन्द था। यह नाम यद्यपि बड़ा नामाकूल था लेकिन चूंकि वह मिनिस्टर का सिफारशी पत्र लाया था इसलिए मजबूरन मैंने उनसे कहा, 'गजानन्द जी! मिनिस्टर तो सिफारिशी-पत्र लिखकर अपना सोशलिज्म का गुजारा कर लेते हैं, लेकिन आप किरायेदार बनकर क्यों गुजारा करना चाहते हैं?'

उसने एक ठण्डी सांस भरी, जो जानी-पहचानी थी और बोला, 'जनाब, मुझे ज्योतिषियों ने बताया है कि इस जन्म में तुम मालिक-मकान नहीं बन सकते। सिर्फ अगले जन्म में चांस है।'

गजानन्द के लहजे में जो सादगी और सरलता थी, उसी के आधार पर मैंने पूछा 'भाई साहब! आप इतने सज्जन और सभ्य क्यों हैं?'

वह झट बोल उठा, 'यह खानदानी विरासत है। मेरा कोई दोष नहीं जनाब!'

अजीब बात है। कई मां-बाप विरसे में मकान छोड़ जाते हैं और कई केवल सज्जनता और शिष्टता! मैंने उसे समझाया, 'गजानन्द जी! वास्तव में कमरा तो एक ही है मगर मेरी पत्नी ने एक चिक लगाकर उसे डेढ़ कमरा बना रखा है ताकि थोड़ा किराया ले सके और फिर शरीफों के लिए केवल एक कमरे में रहना जंचता भी नहीं।'

पर वह न माना। मजबूरन मैंने वह डेढ़ कमरा गजानन्द के हवाले कर दिया।

एक दिन मुहल्ले के तीन-चार प्रतिष्ठित लोग तशरीफ लाये। मेरा मतलब है, लिबास से वे प्रतिष्ठित मालूम होते थे। एक ने कहा, 'बधाई हो फिक्र साहब! आप अब मालिक मकान बन गये हैं।'

दूसरे ने स्पष्ट किया, 'जब तक किरायेदार नहीं आया था, आप मालिक-मकान कहलाने के अधिकारी नहीं हुए थे।'

तीसरे ने एक फार्म मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा, 'और अब आप हमारी 'मुहल्ला रंगपुरा मालिक मकान एसोसिएशन' के

सम्मानित सदस्य बन गए।'

मैंने अपने ज्ञान में वृद्धि करने के आशय से पूछा, 'इस एसोसिएशन के जन्म का कोई उचित या अनुचित उद्देश्य?'

वे बोले, 'बात यह है जी कि किराए-दार लोग बड़े बदमाश होते हैं?'

'यानी कि मेरा किराएदार भी बदमाश है?'

'नहीं है तो हो जाएगा। इसलिए मालिक-मकान आपस में भाई-चारा पैदा करना चाहते हैं और इसीलिए आज से आप हमारे भाई हैं।'

मेरा जी चाहा, उन्हें कह दूं किसी मंत्री की सिफारिश लाइए तब आपका भाई बनूंगा। लेकिन यह शर्त भौंडी मालूम हुई क्योंकि इसे प्रतिष्ठित लोग आसानी से पूरी कर सकते थे। आंखें बन्द कर हस्ताक्षर कर दिए, हालांकि हस्ताक्षर करने के बाद अपनी हरकत पर बहुत आश्चर्य हुआ। कुछ दिन पहले मैंने गजानन्द को भी अपना भाई कहा था। अब मकान-मालिकों का भी भाई बन गया हूं। ये दो परस्पर विरोधी किस्म के भाई...? लेकिन फिर सोचा, 'इस दुनिया के सभी इन्सान भाई-भाई होते हैं।'

उसी शाम मैंने गजानन्द से सूचनार्थ निवेदन कर दिया कि आज से आप भाई साहब नहीं हैं बल्कि किरायेदार हैं।

एसोसिएशन का (सम्मानित) सदस्य बन जाने से मेरी जिम्मेदारियां बढ़ गई थीं। इसलिए मैं दिन-रात इस टोह में रहने लगा कि गजानन्द के कमरे से कोई आवाज उठे और मैं छत फाड़ दूं। यहां तक कि उसके बच्चों के रोने की आवाज भी आए तो मैं ललकार उठूं, लेकिन ऐसी कोई आवाज शायद गजानन्द के भाग्य में नहीं लिखी थी।

एसोसिएशन के माननीय पदाधिकारी समय-असमय मेरे यहाँ 'विजिट' करते रहे और मुझे बताते रहे कि गजानन्द से कौन-कौन सी बदमाशियों की संभावनाएं हैं और उनकी रोकथाम के लिए थाने कब जाना चाहिए, गालियां कब देनी चाहिएं। पालतू कुत्ता कब छोड़ना चाहिए और गुंडे बुलाकर उन्हें शराब कब और क्यों पिलानी चाहिए।

एक दिन एसोसिएशन के प्रेसीडेंट जिनकी शक्ल बदसूरत और लिबास खूब-सूरत था, तशरीफ लाए और जैसे मुझसे बड़ी सहानुभूति प्रकट करते हुए कहने लगे, 'फिक्र साहब! एसोसिएशन के सदस्यों में आपकी प्रतिष्ठा कुछ कम हो रही है, बल्कि कई एक तो (माफ कीजिये) आपकी नियत पर भी संदेह करने लगे हैं कि आपके कारण आपके किरायेदार के हौंसले बुलन्द हो गये हैं और इसका असर उनके अपने किराये-दारों पर बुरा पड़ रहा है।'

मैंने निवेदन किया, 'मगर प्रेसीडेंट साहब! इसे मेरी ट्रेजडी समझिए कि गजानन्द सज्जन और सभ्य व्यक्ति है।'

वे बोले, 'यह कभी हो ही नहीं सकता किरायेदार सभ्य होते ही नहीं।'

'लेकिन वह कोई असभ्य हरकत नहीं करता।'

'कभी नहीं करता? अच्छा बताइये गुसलखाने में जाकर गुनगुनाता है कि नहीं?'

'ऊं हूं!'

'बड़ा डल किरायेदार है। आप अपना किरायेदार बदल दीजिये। वरना सभी

शेष ३८ पर

मदहोश
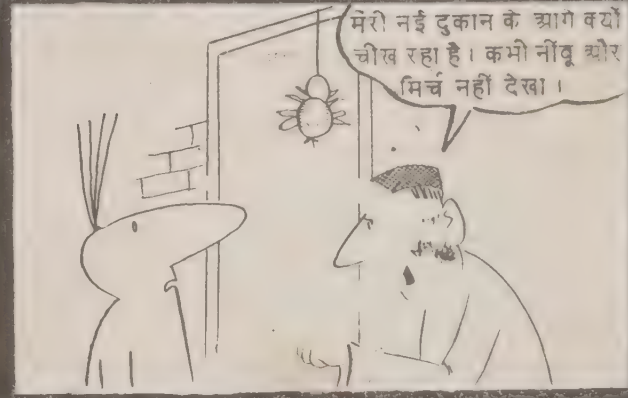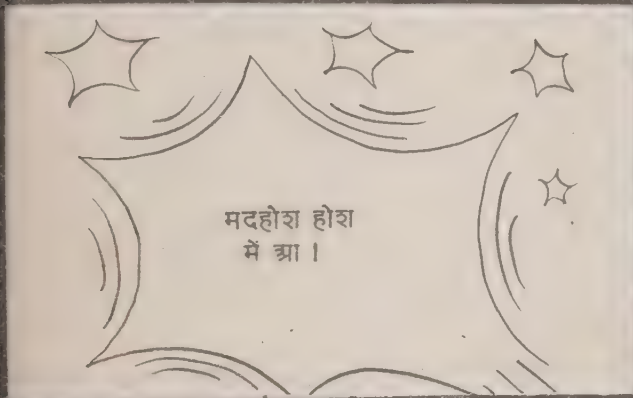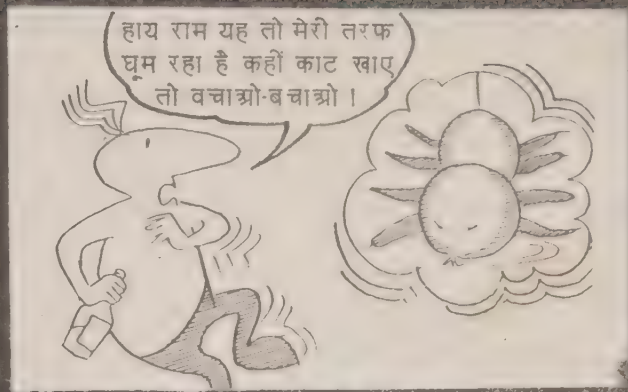
डरपोक

हमारा एक मित्र अपनी पत्नी से बहुत डरता था । वैसे वह बड़ा मस्त मौला था, लेकिन पत्नी के सामने भीगी बिल्ली बना रहता था । हम सब यह बात जानते थे और उसे हुकम का गुलाम कहकर पुकारते थे । वह इससे चिढ़ता था और अपनी कमी को हरचन्द छिपाने की कोशिश करता था ।

एक दिन वह अपनी शान बघार रहा था, तब हमने उसको ताव दिलाया कि यदि उस शाम को वह हमें अपने घर चाय पिलाये और पत्नी के हाथ का नमकीन खिलाये तो हम उसे मान जायेंगे । वह मान गया ।

शाम को हम सब उसके घर पहुँचे तो उसने पत्नी को आवाज लगाई, "सुनती हो जी, कुछ दोस्त आये हैं । उनके लिए चाय नमकीन भेज दो ।"

आध घण्टे तक बाट देखकर उसने फिर आवाज लगाई । चाय न आनी थी न आई ।

आखिर वह दाँत. किटकिटाता अन्दर जाता हुआ गरजा, "आज या तो मैं ही नहीं......"

हमें पत्नी का सधा स्वर सुनाई दिया, "या ?"

"या......फिर मैं ही नहीं," कह कर वह द्वार से ही लौट आया ।

सुरेन्द्र अग्रवाल

उपनगर से टोकियो स्टेशन तक एक ट्रेन प्रायः दो साल से लेट आया करती थी । एक दिन गाड़ी ठीक समय पर पहुंच गयी । यह देख मुसाफिरों को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने इस खुशी में कुछ धन इकट्ठा कर ड्राइवर को भेंट किया ।

'मुझे धन लौटाते हुए बड़ा दुःख हो रहा है, यद्यपि मुझे इसकी बड़ी आवश्यकता है, परन्तु आप लोगों को बता देना ही उचित होगा कि यह कल की गाड़ी है जो २४ घंटे लेट है ।' ड्राईवर ने कहा ।

●

सोमवार वाले दिन एक गरीब वृद्धा पास के शिव मन्दिर में गई और शिवजी की मूर्ति के पास इस प्रकार वन्दना करने लगी—'हे प्रभो, यदि मुझे इस संसार से मुक्ति दिला दो तो मैं अगले सोमवार को पांच आने का प्रसाद अवश्य बांटूंगी ।

पृष्ठ ३६ से आगे

सदस्य आपका सोशल-बायकाट करने की सोच रहे हैं।' मैं इस धमकी को कोई चैलेन्ज देने योग्य नहीं रहा था, इसलिये सोच-सोच कर मैंने गजानन्द के विरुद्ध डायरेक्ट-एक्शन का निश्चय कर लिया। बाजार से गालियों की एक किताब ले आया और सारी रात उसकी स्टडी करता रहा।

दूसरी सुबह मैं अपने नथुने (आदि) फुलाकर गजानन्द के पास पहुंच गया और उससे बोला, 'तुम सज्जन नहीं उल्लू हो।'

वह हैरान हुआ। जिससे मुझे खुशी हुई। मैंने उस उल्लू से पूछा, 'यह खिड़की का शीशा किस उल्ले के पट्ठे ने तोड़ा?'

'आपके छोटे साहबजादे ने अनजाने में एक ढेला फेंक दिया।'

'तो नालायक, तुमने उसके बाप को गंदी गालियां क्यों नहीं दीं!'

'बच्चे सबके बराबर होते हैं।'

मैं दो, तीन दिनों तक देखता रहा कि शायद वह सही रास्ते पर आ जाये।

तीसरे दिन वह उलटा मुझे सीधे रास्ते पर ले आया और मैकेनिक को बुलाकर अपने पैसों से नया शीशा फिट करवा दिया ताकि मेरे तलुओं में आग लग जाये। जी चाहा अपने छोटे साहबजादे को सवा रुपया रिश्वत देकर कहूं कि इस नये शीशे को भी ढेला मारकर चकनाचूर कर दो लेकिन वह अवज्ञाकारी निकला। कहने लगा, 'गजानन्द मुझे अंग्रेजी के लैसन इतनी अच्छी तरह और प्यार से पढ़ाता है कि अवज्ञाकारी बनना ज्यादा पसन्द करूंगा।'

गोया यह एक षड्यंत्र था। वह बच्चे और बच्चे के बाप में फूट के बीज डाल रहा था। ऐसे आदमी को किरायेदार रखना अपने पांव, बल्कि अपने खानदान के पांव पर कुल्हाड़ी मारना था। सोच-सोचकर मैंने उस षड्यंत्र का तोड़ ढूंढ लिया। दिल ही दिल मैंने उसकी गरदन पकड़ ली और जबान ही जबान से कहा, 'अगले सप्ताह मेरे बड़े लड़के की शादी है इसलिये मेरा कमरा खाली कर दो।'

शादी का समाचार सुनते ही गजानन्द ने कहा, 'मैं अजीज रवीन्द्र की शादी की खुशी में हर कुरबानी देने के लिए तैयार हूं।'

अजीब बोदा आदमी है। उसे मकान खाली करने का दुःख न था, बल्कि मेरे बेटे के विवाह की खुशी थी। यानी अब मैं उसका सामान भी जबरदस्ती निकाल कर नहीं फेंक सकता था। गुस्से में आकर मैं शाम को बालकनी पर खड़ा हो गया और सारी दुनिया और उस दुनिया को बनाने वाले भगवान तक को सुनाने के लिये ऊंची आवाज में कहने लगा, 'सुनिये साहेबान, यह क्या बदमाशी है? मेरा किरायेदार मुझे घायल करने के लिये कल रात गुंडे ले आया। उन्हें शराब पिलाई, लेकिन मैं इस गुंडागर्दी से नहीं डरता। मैं उसकी हड्डियां चबा जाऊंगा क्योंकि सुपरिटेन्डेन्ट पुलिस मेरी साली का बहनोई है और डिप्टी कमिश्नर मुझ से स्कूल में हिसाब के सवाल ठीक करवाता रहा है। हूं! मैं अपने लड़के की शादी पर इससे कमरा खाली करवा के रहूंगा।'

यह सुनकर एसोसिएशन के प्रेसीडेंट ने मेरे सम्मान में काकटेल पार्टी दी [illegible] देखकर मुहल्ले के मुसटंडे किरायेदार [illegible] कनी पर चढ़ आये और गरजने लगे।

'कौन माई का लाल है, जो गजा[illegible] से कमरा खाली करवा ले? जो [illegible] टकरायेगा, पाश-पाश हो जायेगा।'

मुझे इन मुसटंडों के साहस पर [illegible] हुई। गोया अब झगड़ा बढ़ेगा और दो[illegible] मजा आयेगा लेकिन गजानन्द ने मेरे [illegible] कराये पर पानी फेर दिया और [illegible] सामान पैक करने लगा। यह मेरी [illegible] पराजय थी। मैं भागा-भागा उसके [illegible] आया और उसका कंधा झिंझोड़कर बो[illegible] 'इस कमरे का किराया दोगुना कर दो [illegible] झक मारकर रहते रहो।'

वह चुप रहा। मनहूस के दिल में [illegible] आदर अधिक था। मैंने उसके बाल [illegible] तरह नोंचे, 'मुझे अंगूठा दिखा दो और [illegible] कि मैं एक छदाम न बढ़ाऊंगा।'

वह उसी तरह सामान बांधता र[illegible] अब मेरे धैर्य का पात्र लबालब हो गया [illegible] पात्र से अचानक एक बूंद टपकी, गजान[illegible] मैंने झूठ कहा था कि तुमने गुंडे मंगवाये [illegible]

'आप झूठ बोल ही नहीं सकते।'

'यह झूठ है कि मेरे लड़के की श[illegible] है।'

'आप झूठ बोल ही नहीं सकते।'

और दूसरे ही क्षण वह मेरे हर झूठ [illegible] पांव तले रोंदता हुआ चला गया और [illegible] बेकरार होकर सीधा उस कमरे में दा[illegible] हुआ और अपने खानदानी दस्तावेज फाड़ [illegible] खिड़की से बाहर फेंकने लगा।

परिणाम

अंक नं० २२ में प्रकाशित वर्ग पहेली का परिणाम
1 अखिरी डाकू
2. जय राज
3. रीना राय
(निर्णय लाटरी द्वारा)
विजेता :–
सुनील कुमार वैष्णव
सी-५६ सेक्टर ए/२
महानगर लखनऊ-२२६००६

बोलते अक्षर किसी भी पाठक ने अच्छे बनाकर नहीं भेजे इनाम का हकदार कोई नहीं।

अंक नं० २३ में प्रकाशित गुमनाम का विजेता : विजय डालमिया
तारिका :– फरीदा जलाल
दीवानी बात :–
नाहीं दहेज में दे सकते तेरे पति को मोटर कार,
देंगे उसे एक पैण्ट-बुश्शर्ट दो, जूते चप्पल चार।

लाभ-युक्ति

—आजाद रामपुरी

"उधार लेना-देना,
प्रेम की कटारी है"
पढ़कर तख्ती,
ग्राहक दुकानदार से बोला—
"लाओ, उधार ही
दो नमक-मिर्च,
मुझे तो तुमसे,
लड़ाई ही प्यारी है।"

भारत में जीवों के ये

विचित्र स्मारक

शक्ति प्रकाश रावत

अब तक आपने महान् व्यक्तियों के मारकों के बारे में सुना होगा व उन्हें देखा ी होगा। लेकिन जीव-जन्तुओं के स्मारक े बारे में आपने कम ही सुना होगा। जब-ब भी मनुष्य जन्तुओं से प्रभावित हुआ ब-तब उसने यादगार के रूप में उनके मारक बनवाये। ऐसे ही कुछ जीव-जन्तुओं े स्मारक हमारे देश में आज भी मौजूद हैं।

ूं का स्मारक :

गुजरात राज्य के अन्हिलवाड़ शहर में एक जूं का स्मारक है। इसके स्थापन के पीछे एक घटना का हाथ बताया जाता है। गुजरात का राजा कुमारपाल जैन धर्म का बड़ा अनुयायी था, साथ ही बड़ा अहिंसक भी था। उसने राज्य में हिंसा पर पाबन्दी लगा रखी थी। पशु-पक्षियों का बध करने वालों और मांसाहारियों को ढूंढ़ निकालने के लिए उसने अपने राज्य में गुप्तचरों का एक जाल-सा बिछा रखा था। ऐसे अपराधियों को वह कड़ी से कड़ी सजा देता था।

एक बार एक व्यापारी ने अपने बालों से एक जूं निकाल कर उसे नाखून से कुचल डाला। इस हत्याकाण्ड की खबर गुप्तचरों को लग गई आनन-फानन में बात कुमारपाल तक जा पहुंची। बस, तुरन्त ही राज्याज्ञा से व्यापारी को अन्हिलवाड़ न्यायालय में पेश किया गया। न्यायालय से व्यापारी को जो दंड मिला उसके अनुसार उसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली गयी और उससे उस शहीद जूं की स्मृति में एक स्मारक बनाया गया; ताकि मरने वाले की आत्मा को शांति पहुंच सके और पाप का प्रायश्चित भी हो जाय। स्मारक बनने के बाद उसका नाम रखा गया 'यूक विहार' (जूं का देवालय)।

भौंरों का स्मारक :

महाराष्ट्र के जेजूरी में स्थित खंडेराय में भौंरों का एक स्मारक है। जिस पर लिखा है 'सवा लाख का भौंरा'। इसकी स्थापना प्रबल हिन्दू-विरोधी मुगल सम्राट औरंगजेब ने की थी।

कथा के अनुसार मुगल सम्राट औरंगजेब महाराष्ट्र के हिन्दू देवालयों को तोड़ने का संकल्प लिए हुए जब जेजूरी पहुंचा, तो उसने खंडेराय के देवालय को भी तोड़ने का आदेश दिया। किन्तु यह देवालय पहाड़ी पर स्थित होने के कारण उसे तोड़ना आसान न था। अतः उसने सुरंग लगाकर तोड़ने का आदेश दिया। उसके सिपाही सुरंग की बत्ती जला ही रहे थे कि भौंरों के एक विशाल समूह ने उन पर आक्रमण कर दिया। औरंगजेब और उनके सिपाही जान बचाने के लिए भागने लगे परन्तु भौंरों की संख्या अत्यधिक होने के कारण वे अपनी सुरक्षा करने में नितांत असफल रहे। भौंरों के डंकों से फौज में कोहराम मच गया। आखिर औरंगजेब ने उनसे पीछा छुड़ाने के लिए अपने एक सरदार द्वारा दी गयी सलाह के अनुसार खंडेराय से मनौती की कि यदि इन भौंरों से वह हमारी रक्षा कर दें, तो वह भौंरों की स्मृति में सवा लाख रुपयों का एक स्मारक बनायेगा। आश्चर्य तब हुआ जब मनौती करते ही सभी भौंरे अकस्मात गायब हो गये। औरंगजेब को बड़ा ताज्जुब हुआ और अपने वचन के अनुसार उसने वहां भौंरों की स्मृति में सवा लाख रुपयों का एक स्मारक बनवा डाला।

मोर-मोरनियों का स्मारक :

बीकानेर (राजस्थान) में मृत राजाओं की छतरियों के साथ ही एक और छतरी है, जिसमें वट वृक्ष तथा मोर-मोरनियों के चित्र अंकित हैं। इस छतरी के निर्माण के पीछे का इतिहास इस प्रकार बताया जाता है :

राजा अनूप सिंह की मृत्यु के उपरान्त उनका अन्तिम संस्कार करने के लिए उन्हें 'सागर' लाया गया। उनके शव के साथ उनकी रानियां भी सती होने वाली थीं। अतः उनकी चिता का घेरा वृहद् आकार का बनाया गया था। राजा के शव को अग्नि लगाई गई तथा रानियां जलने लगीं कि इतने में समीप के एक वट वृक्ष से एक मोर आकर चिता में कूद पड़ा। लोग चिल्लाने लगे और उन्होंने उसे चिता से निकाला ही था कि एक मोरनी भी आकर चिता में कूद पड़ी। उसे निकाल कर मोर के समीप रखा ही था कि एक और मोर चिता में कूद पड़ा। इस प्रकार इधर मोर-मोरनियों को पंक्तिबद्ध किया जा रहा था और इधर मोर-मोरनियां चिताकुंड में कूदते जा रहे थे। लोग हैरान थे कि तभी प्रज्वलित ज्वाला से आवाज आयी—'इन्हें जलने दो, इन्हें भी हमारी चिता के धुएं से सत् चढ़ गया है। ये अब जलेंगे ही, क्योंकि ये पूर्व जन्म में हमारे राजवंश के ही थे किन्तु दुष्कर्म के कारण वे इस योनि में पहुँच गये थे।' लोगों ने फिर उन्हें कूदने से न रोका और सब कुछ स्वाहा हो जाने के बाद उनकी स्मृति में उक्त छतरी (स्मारक) का निर्माण किया गया।

स्वामिभक्त घोड़ा-चेतक का स्मारक :

'चेतक' के नाम से सभी परिचित हैं। स्वामिभक्ति का नाम आते ही मस्तिष्क में बरबस चेतक का नाम कौंध जाता है। उसका नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है। इस स्वामिभक्त घोड़े ने अपने स्वामी महाराणा प्रताप को बीच युद्ध-मैदान से बिना अपने प्राणों की परवाह किये सुरक्षित स्थान तक पहुंचा दिया था, जैसे ही घोड़े ने स्वामी को अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचाया उसके साथ ही उसने अपनी प्यारी निगाहों से अन्तिम बार स्वामी क व सदा के लिए उन्हें बन्द कर उसकी स्वामिभक्ति की स्मृति में में एक स्मारक बना हुआ है।

"चलो''अन्दर चलो।'

कर्नल फौजी ढंग में मुड़ गया'''दशरथ के पीछे-पीछे बरामदे में दाखिल हुआ'''कर्नल होंठों-ही-होंठों में बड़बड़ाता जा रहा था—

'यह आज के नौजवान जाने अपने आपको क्या समझते हैं ? मैं इन्हें डाक्टर ही नजर नहीं आता।'

'आई एम सॉरी सर मुझे ध्यान ही नहीं रहा था।'

'ह्वाट सॉरी सर'''' कर्नल दशरथ पर पलट पड़ा, 'तुम क्या किसी बूढ़े की आत्मा हो ?'

'ज'''ज'''जी''' दशरथ बौखला गया।

'आजकल के नौजवानों में सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि फटाक से अपना दोष स्वीकार कर लेते हैं।'

दशरथ के होंठ कांपकर रह गए। कर्नल ने बड़बड़ाते हुए दरवाजा खोलना चाहा लेकिन दरवाजा अन्दर से बन्द था कर्नल ने ऊंची आवाज से कहा—

'वन्दना बेटी दरवाजा खोलो।'

'ओ नो डैडी'''मैं दरवाजा नहीं खोलूंगी।'

'क्यों नहीं खोलोगी ?'

'वह चला गया या है ?'

'अभी यहीं है—।'

'ओ डैड'''भगवान् के लिए उसे भगा दीजिए।'

'बेटी'''मैंने उसका हाथ छूकर देख लिया है वह भूत नहीं है।'

'आपने भली प्रकार सन्तोष कर लिया है डैड ?'

'हां बेटी'''भली प्रकार'''।'

'और अगर कोई गड़बड़ हो गई तो'''?'

'तुम दरवाजा तो खोलो।' कर्नल झुँझलाकर बोला, अगर भूत होता तो क्या बन्द दरवाजे से अन्दर नहीं आ सकता था ?'

वन्दना ने दरवाजा खोल दिया किन्तु उसकी आंखों में अब भी चिन्ता और डर झलक रहा था। दशरथ कर्नल के पीछे-पीछे अन्दर प्रविष्ट हुआ और वन्दना बिदक कर दूर चली गई और भयभीत नजरों से दशरथ को देखने लगी। कर्नल ने एक कुर्सी की ओर संकेत करके दशरथ से कहा—

'बैठ जाओ—।'

दशरत बैठ गया। कर्नल ने वन्दना से 'मेरा बाक्स लेकर आओ।'

वन्दना अन्दर चली गई'''कर्नल ने दशरथ का हाथ अपने हाथ में लेकर ध्यान से देखा और बोला—

'इन्जैक्शन भी लगवाना पड़ेगा'''टिटनस होने का खतरा है।'

'जी—'

वन्दना बॉक्स लेकर आ गई। कर्नल ने दशरथ का घाव साफ करके बैंडिज किया और इन्क्जैशन भी दिया फिर बोला—

'अब क्या विचार है तुम्हारा ?'

'किस बारे में ?'

'उस कोठी में रहोगे ?'

'स्पष्ट है'''।'

'क्या तुम्हें अपने प्राण प्यार नहीं ?'

'मैं भूत प्रेत पर विश्वास नहीं रखता।

'इसका मतलब है मैं झूठ बोल रहा हूं ?

'जी—यह मैंने कब कहा ?'

'तुम्हारा अर्थ तो यही था।' कर्नल ने आँखें निकालीं।

'ज'''ज'''जी मैं'''।'

'शटअप—।' कर्नल गुर्राकर खड़ा हो गया।

'एण्ड गैट आऊट।'

दशरथ हड़बड़ाकर खड़ा हो गया। वन्दना उसके खड़े होते ही झपटकर दूर चली गई थी'''फिर कर्नल न जाने क्या-क्या बकता रहा लेकिन दशरथ तेज़ी से बाहर चला आया। बाहर आकर उसने सोचा बड़े अजीब बाप बेटी हैं—आप ही बुलाया और आप ही अपमानित करके निकाल दिया फिर वह अपनी कोठी की ओर बढ़ा ही था कि उसकी दृष्टि फाटक की ओर उठ गई और वह चौंक पड़ा—

उसकी कोठी के फाटक पर भंवरलाल खड़ा था जो झाँक-झाँक कर अन्दर देखने का प्रयत्न कर रहा था। दशरथ मुस्कराता हुआ भंवरलाल की ओर बढ़ा और पीछे से उसके कंधे पर हाथ रखता हुआ बोला—

'भंवरलाल जी'''?"

भंवरलाल अनायास उछलकर दशरथ की ओर मुड़ा। उसके चेहरे का रंग सफेद पड़ गया था और आँखों से भय झांकने लगा था। दशरथ को देखते ही उसने संतोष की साँस ली और बोला—

'ओह—आप हैं ?'

'आइए'''अन्दर'''चलिए'''।' दशरथ ने कहा।

'अन्दर'''!' भंवरलाल बोला, 'नहीं-नहीं मैं अन्दर नही

'क्यों ?' दशरथ ने आश्च

'वह'''वह'''बात यह है जल्दी में हूं।'

'खैर—फिर कभी सही आना हुआ ?'

'ओह—मैं देखने आया ठाक है ना ?'

'बिल्कुल ठोक-ठाक है।'

'किसी प्रकार का कोई क

'जी—बिल्कुल नहीं।'

'पड़ौसियों ने तो बहुत बह

'जी हाँ—' दशरथ मुस्क 'बहुत अधिक'''।'

'अरे'''बड़े खराब पड़ौसी वाले को बहका देते हैं कि कोई रहती है इसलिए बरसों से क नहीं आया इसमें।'

'लेकिन मेरा विश्वास इ नहीं।' दशरथ हँसकर बोला पर विश्वास नहीं करता।

'ओह—वैरी गुड'''' भंव बजाकर बोला, 'आप जरूर रह सकते हैं।'

'आइए ना'''इतनी देर कप चाय पी लेते।'

'ओह—नहीं-नहीं'''' भं जल्दी से बोला, 'मैं अन्दर न मेरा मतलब है कि मुझे बहुत है—बहुत जरूरी काम है— आया था कि अगर मकान क राई की जरूरत हो तो क लौटते समय चपरासी को सा

'जी—!' दशरथ मुस्क 'सफाई-सुथराई तो रधिया क

'रधिया ? क्या कोई ली है ?'

'जी हाँ—' दशरथ ने की नौकरानी की बहन है।''

'हमारी नौकरानी की लाल ने आश्चर्य से दोहराया

'जी हाँ—चम्पा है न रानी—।'

शेष आगामी

शेख जानी शेख ऊमर, हाउसिंग सोसायटी डाक बंगला रोड, जयपुर, १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, खो-खो खेलना, भाग कर चिड़िया पकड़ना।

दिलीप कुमार कटारुव, ३२ मैकलोड स्ट्रीट, कलकत्ता, १८ वर्ष, दीवाना के साथ दीवाना बनना, पुस्तकें पढ़ना, कहानी बढ़ा-चढ़ा कर कहना।

कृष्ण कुमार "कमल" आई० एस० सी० प्रथम वर्ष, गुदरी बाजार, समस्तीपुर, (बिहार), १६ वर्ष, उपन्यास पढ़ना और दादागीरी करना।

सुन्दर लाल, ४ श्रोल्ड सर्वे रोड, देहरादून, (यू० पी०), १८ वर्ष, उपन्यास पढ़ना, मित्रता करना, पान को चाव से खाना।

बाकू राम मेहरा, किशन गंज, पुराना रोहतक रोड, नई दिल्ली, २० वर्ष, अपने आपको ज्यादा सम्भालना, एलबम बनाना।

दामोदर आर० वलेचा, बैरक नम्बर ८३३, रूम नम्बर ३, उल्हास नगर, २२ वर्ष, उपन्यास लिखना, भूतों को डराना।

अजय सेठ, १/११ रूप नगर, दिल्ली, १२ वर्ष, पत्रिकाओं में अपने लेख तथा फोटो छपवाना, मोनो एक्टिंग करना, बात बनाना।

हयात मोहम्मद, खोजनपुर फैजाबाद (उ० प्र०), १७ वर्ष, पढ़ना, शरीफ लोगों से अच्छी बात सीखना, दूसरों की भलाई करना।

मोहन सिंह पाल, मौलाना आजाद नगर, लाइन नम्बर १५, हलद्वानी (नैनीताल), १७ वर्ष, मोटर साईकिल चलाना, मस्त होना।

शशांक कुमार जोशी, रोमुका एजेन्सी मुख्य पथ, धाम (धनबाद), २२ वर्ष, पत्र-व्यवहार करना, सिनेमा देखना, पैदल चलना।

राजेश पति त्रिपाठी, गर्दनी बाग साधनापुरी, पटना, (बिहार), १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना, टैस्ट मैच देखना, पर्यटन करना।

राकेश कुमार गुलाटी, ६५ वासदेव नगर, अन्धा मुगल, पुरानी दिल्ली, १७ वर्ष, घर का काम करना, सफाई रखना, पढ़ना।

हरिकिशन लहकरा, गांव व डाकखाना खटावली, जिला महेन्द्र गढ़ (हरियाणा), २४ वर्ष, फोटोग्राफी करना तथा पत्रिकायें पढ़ना।

अमरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, सुमित्रा देवी लेडी के साथ भिजीटर, जानी बाजार, सासाराम (रोहतास), १६ वर्ष, पढ़ना।

प्रदीप कुमार, सदर बाजार, खलासी मोहल्ला जमालपुर (मुंगेर), १७ वर्ष, शतरंज और कैरम बोर्ड खेलना तथा घूमना-फिरना।

निसार अहमद ताजिर द्वारा गुलाम मोहम्मद (फोरमैन) बाजार, पो० आ० धनपुरी, शहडोल (म० प्र०), १८ वर्ष, टिकट संग्रह।

श्रोमप्रकाश पुरोहित, बापू नगर, गोड भवन, बांगड कालिज, पाली मारवाड़, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फिल्में देखना।

सुरेश दूबे, १०७ बादशाही मण्डी इलाहाबाद, १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना, अपने से बड़ों का आदर करना।

[illegible] 'टूबिजा' ६/III [illegible] कालोनी दिल्ली, १६ [illegible] फिल्में देखना, पढ़ना, [illegible] खेलना, उपन्यास को [illegible] पढ़ना।

एम० एल० माहेश्वरी, नई लाइन गंगा शहर (छतरगढ), २२ वर्ष, लड़कों के साथ खेलना, कहानी और जासूसी उपन्यास पढ़ना।

रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव, रामनरायन प्रसाद एल. आई. सी. समस्तीपुर, १८ वर्ष, टिकट जमा करना, पढ़ना, ड्रेस रखना।

विजय कुमार, केन्द्रीय उत्पादक शुल्क (मुख्यालय) कानपुर १६ वर्ष, पत्र-मित्रता, घूमना, तैरना, आश्चर्य में डालना।

विश्वनाथ शर्मा, बन भाग पूल, पोस्ट मधुबनी बाजार, पूर्णियां (बिहार), २२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, अभिनय करना, गाना गाना।

नूर अहमद 'खान दोस्त मुकाम व पोस्ट रेगाली, जिला सम्बलपुर (उड़ीसा), २१ वर्ष, पुरानी फिल्में देखना शायरी करना।

आलिम सिंह अहरीला, नम्बर तीन इन्दिरा कालोनी रोहतक, १८ वर्ष, शरीफों के साथ शरीफ और बदमाशों के साथ बदमाश बनना।

संग्राम केशरी पटनायक, रेड-क्रास स्ट्रीट, पोस्ट भंजनगर उड़ीसा, १६ वर्ष, पढ़ना, दूसरों को खूब हंसाना और स्वयं न हसना।

सुशील कुमार घीगड़ा, मो० मुनारा मकान नम्बर १२० नकोदर, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, सदा सफाई का ध्यान रखना।

आनन्द कुमार बेरीवाल, साम्हर बीड़ी नम्बर ५, सदर बाजार, रायगढ़ (मध्य प्रदेश), १७ वर्ष, कैरम, बैडमिन्टन खेलना।

...ना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______

पता ______

शौक ______

...र, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र स्व०
भूषण पं० हंसराज शर्मा

२० जुलाई से २६ जुलाई ७८ तक

मेष : सप्ताह उत्तम है फिर भी किसी तरह का निर्णय करने से पहले भली प्रकार से सोच लें तो अच्छा रहेगा, आर्थिक स्थिति पहले जैसी ही फिर भी किसी–किसी समय धन की चिन्ता बनी रहेगी।

वृष : संघर्षपूर्ण होने के साथ–साथ यह सप्ताह दिलचस्प भी रहेगा, अफसरों की ओर से कुछ परेशानी, फिर भी प्रयत्न करने पर सफलता मिलती रहेगी, कामकाज की व्यस्तता में समय काफी व्यतीत होगा।

मिथुन : कारोबारी कामों में समय अधिक व्यतीत होगा, कुछ समस्याएं तो बनी रहेंगी. जिससे मानसिक परेशानी बढ़ेगी और ये दिन कुछ संघर्षपूर्ण से महसूस होंगे, आर्थिक तंगी भी आ सकती है।

कर्क : इन दिनों उलझनें काफी रहेंगी और कोई नई समस्या गम्भीर रूप धारण करने के बाद समाप्त हो जावेगी, आमदनी ठीक समय पर मिलेगी जिससे आपको अपनी योजनाओं में सफलता मिलती रहेगी।

सिंह : व्यापार को बढ़ाने के लिए कोई नई योजना बनाएंगे, परन्तु धन की कमी से इन दिनों परेशानी का मुख्य कारण बनी रहेगी, लाभ अच्छा होता रहेगा परन्तु घरेलू योजनाओं पर व्यय काफी होगा।

कन्या : कामकाज की व्यस्तता में समय अधिक निकल जावेगा, समस्याएं भी इन दिनों घटती बढ़ती रहेंगी, और संघर्षपूर्ण हालात पैदा होते रहेंगे फिर भी आपकी अपनी योजनाओं में सफलता मिलती रहेगी।

तुला : यह सप्ताह सुधारों की सूचना देता है, कुछ चिन्ताएं तो रहेंगी, कुछ संदर्भ भी आवेंगे जो स्वतः समाप्त होते जावेंगे, आत्मविश्वास बढ़ेगा, और कामकाज में भी धन लगने लगेगा।

वृश्चिक : यह सप्ताह अच्छा रहेगा और शुभफल प्रयत्न करने पर ही प्राप्त होंगे. व्यापार की स्थिति में भी धीरे–धीरे सुधार होता जावेगा लाभ की आशाएं बढ़ेंगी, नए काम से लाभ हो सकता है।

धनु : इन दिनों आपको कई तरह के उतार चढ़ाव देखने को मिलेंगे, किसी विशेष व्यक्ति से मुलाकात होगी, साहस शक्ति सुदृढ़ रहेगी. फिर भी किसी-किसी समय मानसिक परेशानी काफी रहेगी।

मकर : पिछले दिनों की अपेक्षा यह सप्ताह कुछ अच्छा रहेगा, समस्याएं तो इन दिनों काफी रहेंगी परन्तु जो उलझनें बढ़ी हुई थी अब समाप्त होती जावेंगी, प्रयत्न करने पर शुभफलों में वृद्धि होगी।

कुम्भ : इन दिनों कोई अप्रिय समाचार मिलेगा या घटना भी हो सकती है, अन्य हालात ठीक चलेंगे और भाग्य भी आपका साथ देता रहेगा, सरकारी कामों में परेशानी परन्तु दौड़धूप करने पर सफलता मिलेगी।

मीन : इस सप्ताह को अच्छा कहा जा सकता है परन्तु लाभ काफी परिश्रम करने पर ही प्राप्त हो सकेगा, दौड़धूप भी काफी रहेगी, व्यापार को सुधारने की योजनाएं बनेंगी, घरेलू झंझटों से परेशानी।

विनोद खन्न

विजय भारद्वा

विनोद खन्ना का पूरा नाम विनोद कुमार खन्ना है। इनका जन्म पेशावर (पाकिस्तान) में हुआ। स्कूल की शिक्षा समाप्त करके इन्होंने कालेज में प्रवेश लिया और बी. काम तक शिक्षा प्राप्त की। कालेज की शिक्षा समाप्त करके विनोद खन्ना का कोई इरादा नहीं था कि वह फिल्म लाईन पकड़ते, उनका इरादा बिजनेस करने का था।

लेकिन विधि का लिखा कौन टाल सकता है। जो होनी होती है वह होकर रहती है। ऐसा ही विनोद खन्ना के साथ हुआ।

उन्हीं दिनों सुनील दत्त अपनी फिल्म 'मन का मीत' बना रहे थे। इस फिल्म में उन्होंने अधिकतर नये कलाकारों को ही चांस दिया था। फिल्म का हीरो था उनका अपना भाई सोमदत्त। हीरोईन थी नवोदित लीना चन्द्रावरकर। शायद सुनील दत्त यही चाहते थे कि सोमदत्त नायक के रूप में चल जाये और सफलता प्राप्त कर जाये! उसी फिल्म में विनोद खन्ना को भी चांस मिला। अब यह अलग बात है कि आज विनोद खन्ना स्टार बन चुका है जब कि सोमदत्त का नाम कोई नहीं जानता।

फिल्म 'मन का मीत' में विनोद खन्ना के खलनायक वाले रोल की सभी ने खुलकर तारीफ की।

खूबसूरत चेहरा, शानदार सेहत, ऊँचा लम्बा कद, महीनी चाल। यही सब कुछ एक हीरो के लिये काफी है यदि उसमें अभिनय क्षमता है तो।

अपनी पहली ही फिल्म की सफलता के बाद विनोद खन्ना के पास कान्ट्रेक्ट की लाईन लग गई। हर कोई अच्छे और सस्ते कलाकार को साईन करना चाहता था

फिल्म 'मेरा गांव मेरा देश' की भूमिका में विनोद खन्ना ने जा दी चाहे रोमांटिक रोल हो, चाहे खल और चाहे विशेष भूमिका, विनोद अपनी जगह बेमिसाल है।

'पूरब और पश्चिम' 'आन सजना', 'मेरे अपने', 'हाथ की 'सौदा', 'खून की कीमत', 'हेरा फेरी', 'अमर अकबर अन्थनी', और 'परा में विनोद खन्ना के अभिनय की प्रत्ये ने तारीफ की है।

इनकी आने वाली फिल्में हैं ' 'आज रात को', 'जेल यात्रा', 'बाज का गुरू',। यह विवाहित हैं और बन चुके हैं।

यह आचार्य रजनीश के शिष्य उनमें बेहदआस्था है। इनका गृहस्थ सुखी है। इन्हें नफरत है तो उन जो इनके बारे में अफवाहें उड़ाते हैं। साप्ताहिक के यह पुराने पाठक हैं।

'सुमंगल' माला
बम्बई-४००